भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर की गृह पत्रिका

अंक-२३

यथार्थ

2025-26

गृह मंत्रालय भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2023-24 हेतु पूर्व और पूर्वोत्तर क्षेत्र संवर्ग में कार्यालय में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार दिनांक 05 मार्च 2025 को गुवाहाटी, असम में प्रदान किये गये। इस कार्यक्रम में भारतीय खान ब्यूरो के क्षेत्रीय कार्यालय भुवनेश्वर को दूसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार माननीय श्री हेमंत विश्वशर्मा, मुख्यमंत्री असम एवं माननीय गृह राज्यमंत्री श्री नित्यानंद राय द्वारा प्रदान किये गये।

कार्यालय की ओर से कार्यालय अध्यक्ष के रूप में श्री अरुण कुमार एवं हिंदी सम्पर्क अधिकारी श्री राजेश कुमार दास द्वारा पुरस्कार प्राप्त किया गया, साथ में सहायक खान नियंत्रक श्री विक्रम देशपांडे एवं श्रीमती सलिला दाश सहायक प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित रहें।

भारतीय खान ब्यूरो भुवनेश्वर की गृह पत्रिका

यथार्थ

अंक – 23
प्रकाशन वर्ष – 2025-26

•सम्पादक
श्री अरूण कुमार
क्षेत्रीय खान नियंत्रक

•सह संपादक
श्री विक्रम देशपांड़े
सहायक खान नियंत्रक एवं हिंदी सम्पर्क अधिकारी

• संपादक मंडली
श्री श्रीनाथ, जेटीओ
श्री सत्यम सिंह, आशुलिपिक
श्री अमृत कुमार चौरसिया, अवर श्रेणी लिपिक
श्री शिवम पाण्डेय, अवर श्रेणी लिपिक

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

डॉ. हरि बाबू कंभमपति
Dr. Hari Babu Kambhampati

सत्यमेव जयते

राजभवन
भुवनेश्वर - 751 008
RAJ BHAVAN
BHUBANESWAR - 751 008

राज्यपाल, ओडिसा
GOVERNOR OF ODISHA

17 सितंबर, 2025

संदेश

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार, खान मंत्रालय, भारतीय खान ब्यूरो के क्षेत्रीय खान नियंत्रक कार्यालय, भुबनेश्वर द्वारा हिन्दी पखवाडे के दौरान कार्यालय की गृह पत्रिका **'यथार्थ'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी एक सहज, सरल और मधुर भाषा है। हिन्दी भाषा भारतीय धर्म, संस्कृति और विचारों के लेनदेन में सक्रीय भूमिका निभाते हुए भारत के राष्ट्रीय एकीकरण को मजबूत करती आ रही है। इस क्रम में भारतीय खान ब्यूरो न केवल खनन क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धतियों को प्रोत्साहित करने, पारदर्शिता स्थापित करने तथा खनिज संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग हेतु निरंतर प्रयास कर रहे हैं, बल्कि हिन्दी के प्रचार, प्रसार और प्रयोग को गति देने के लिए निरंतर प्रयास करना एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे विश्वास है कि **'यथार्थ'** पत्रिका के माध्यम से खनन क्षेत्र से संबंधित नवीनतम जानकारियाँ पाठकों तक पहुंचने के साथ साथ कर्मचारियों की सृजनात्मक एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का भी मंच प्रदान करेगी।

मैं **'यथार्थ'** वार्षिक हिन्दी पत्रिका के लेखकों, संपादकों, पाठकों तथा इस कार्य में लगे हुए सभी सदस्यों को बधाई देते हुए इसके सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

(हरि बाबू कंभमपति)

Phone : 91-674-2536111/2536581, E-mail : govodisha@nic.in, Website : www.rajbhavanodisha.gov.in

पीयूष नारायण शर्मा
महानियंत्रक (प्रभारी)
Peeyush Narayan Sharma
Controller General (I/c)

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
खान मंत्रालय
MINISTRY OF MINES
भारतीय खान ब्यूरो
INDIAN BUREAU OF MINES

संदेश

प्रिय सहकर्मियों,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर की गृह पत्रिका "*यथार्थ*" का यह अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका हमारे विभाग की बौद्धिक सक्रियता, रचनात्मकता और संगठनात्मक एकता का जीवंत दस्तावेज है। "*यथार्थ*" न केवल हमारी गतिविधियों और उपलब्धियों को सामने लाती है, बल्कि यह हमें आत्ममंथन और आत्मविकास का अवसर भी प्रदान करती है।

आज का समय खनन एवं खनिज क्षेत्र में तीव्र परिवर्तन और तकनीकी प्रगति का है। सतत विकास की अवधारणा और पर्यावरणीय संतुलन की आवश्यकता के बीच हमें अपनी जिम्मेदारियों को और अधिक गंभीरता से निभाना होगा। खनिज संसाधन राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं, अतः उनका विवेकपूर्ण उपयोग, संरक्षण और पारदर्शी प्रबंधन हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। भारतीय खान ब्यूरो इस दिशा में अनुसंधान, नीति-निर्धारण, नियमावली और निरीक्षण के माध्यम से लगातार योगदान देता रहा है।

मुझे विश्वास है कि "*यथार्थ*" जैसी पत्रिकाएँ हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों के विचारों, अनुभवों एवं रचनात्मक प्रतिभा को एक साझा मंच प्रदान करेंगी। लेखन के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान होता है और ज्ञान की परंपरा आगे बढ़ती है। मैं सभी सहकर्मियों से आग्रह करता हूँ कि वे इस पत्रिका में सक्रिय सहभागिता करें और इसे और अधिक समृद्ध बनाने में योगदान दें।

संगठन तभी प्रगति करता है जब उसके सभी सदस्य मिलकर कार्य करते हैं। आप सभी की प्रतिबद्धता, परिश्रम और नवाचार की भावना ही भारतीय खान ब्यूरो को नित नई ऊँचाइयों तक ले जाती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में हम सामूहिक प्रयासों से खनन क्षेत्र में पारदर्शिता, दक्षता और सतत विकास के नए मानदंड स्थापित करेंगे।

अंत में, मैं संपादकीय टीम को इस सराहनीय प्रयास के लिए हृदय से बधाई देता हूँ। आशा है कि "यथार्थ" का यह अंक पाठकों को प्रेरित करेगा और हमें उत्कृष्टता की ओर निरंतर अग्रसर रहने की ऊर्जा प्रदान करेगा।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

पीयूष नारायण शर्मा
महानियंत्रक प्रभारी

इन्दिरा भवन, सिविल लाईन्स, नागपुर 440 001 फोन/ फैक्स क्र. 0712 0712-2560041, 2565073 ईमेल:-cg@ibm.gov.in
Indira Bhavan, Civil Lines, Nagpur 440 001 Phone/Fax No. 0712-2560041, 2565073, E mail:-cg@ibm.gov.in

पंकज कुलश्रेष्ठ
मुख्य खान नियंत्रक (एम ई एस)

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
खान मंत्रालय
MINISTRY OF MINES
भारतीय खान ब्यूरो
INDIAN BUREAU OF MINES

संदेश

प्रिय पाठकों,

मुझे अत्यंत हर्ष है कि भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर की गृह पत्रिका "*यथार्थ*" का यह नया अंक आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत हो रहा है। यह पत्रिका हमारे संगठन की गतिविधियों, उपलब्धियों और नवीन पहलों का जीवंत दर्पण है, जो न केवल हमारे कर्मचारियों को बल्कि खनन क्षेत्र से जुड़े सभी हितधारकों को ज्ञान, प्रेरणा और मार्गदर्शन प्रदान करती है।

भारतीय खान ब्यूरो का ध्येय देश की खनन और खनिज क्षेत्र की सतत् प्रगति सुनिश्चित करना है। आज जब राष्ट्र *आत्मनिर्भर भारत* और *हरित विकास* की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब खनिज संसाधनों के वैज्ञानिक, जिम्मेदार और पारदर्शी दोहन की आवश्यकता और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। इस दिशा में ब्यूरो ने निरीक्षण, अनुसंधान, नीतिगत सहयोग और आधुनिक तकनीकी उपकरणों के प्रयोग के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति की है।

भुवनेश्वर स्थित हमारे संगठन की यह पत्रिका, कर्मचारियों के रचनात्मक विचारों, साहित्यिक अभिव्यक्तियों तथा नवीन पहल को मंच प्रदान करती है। इससे न केवल आंतरिक संवाद की संस्कृति सुदृढ़ होती है, बल्कि कर्मचारियों में संगठन के प्रति आत्मीयता, नवाचार और रचनात्मकता की भावना भी जागृत होती है।

हमारा प्रयास है कि *यथार्थ* केवल औपचारिक प्रकाशन न बनकर, बल्कि विचार-विमर्श और सकारात्मक संवाद का ऐसा माध्यम बने जो प्रत्येक पाठक को नई दृष्टि प्रदान करे। आज के प्रतिस्पर्धी और तकनीकी युग में हमें अपनी कार्यशैली को और अधिक पारदर्शी, कुशल और उत्तरदायी बनाने की दिशा में सतत् प्रयत्नशील रहना होगा।

मैं आशा करता हूँ कि यह अंक आप सभी को पसंद आएगा और हमारे प्रयासों को नई ऊर्जा प्रदान करेगा। इस पत्रिका की संपादकीय टीम तथा इसमें अपने विचारों और लेखों का योगदान देने वाले सभी सहयोगियों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ। साथ ही, मैं सभी कर्मचारियों से अपेक्षा करता हूँ कि वे इसी प्रकार अपनी प्रतिभा और ज्ञान से इस पत्रिका को और अधिक समृद्ध बनाते रहें।

इसी शुभकामना के साथ कि *यथार्थ* हम सभी के लिए प्रेरणा, ज्ञान और प्रगति का आधार बने—

(पंकज कुलश्रेष्ठ)
मुख्य खान नियंत्रक (एम.ई.एस.)

इन्दिरा भवन, सिविल लाईन्स, नागपुर 440 001 फोन/ फैक्स क्र. 0712 0712-2560041, 2565073ईमेल :-cg@ibm.gov.in
Indira Bhavan, Civil Lines, Nagpur 440 001 Phone/Fax No. 0712-2560041, 2565073, E mail:-cg@ibm.gov.in

डॉ. योगेश जी. काले
मुख्य खान नियंत्रक एवं राजभाषा अधिकारी
Dr. Yogesh G. Kale
Chief Controller of Mines
& Rajbhasha Adhikari

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
खान मंत्रालय
MINISTRY OF MINES
भारतीय खान ब्यूरो
INDIAN BUREAU OF MINES

02 सितम्बर 2025

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर की गृह पत्रिका "*यथार्थ*" का यह नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे विभागीय कार्यकलापों, उपलब्धियों एवं योजनाओं का दर्पण है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और सृजनात्मक लेखन का भी सशक्त माध्यम है।

संविधान की भावना के अनुरूप राजभाषा हिंदी का उद्देश्य केवल प्रशासनिक भाषा के रूप में सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे संवाद, कार्यकुशलता और राष्ट्रीय एकात्मकता को सुदृढ़ बनाने का माध्यम भी है। भारतीय खान ब्यूरो सदैव इस दिशा में गंभीर और सतत प्रयासरत रहा है।

"*यथार्थ*" पत्रिका की विशेषता यह है कि यह केवल प्रशासनिक सूचनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें हमारे सहकर्मियों की साहित्यिक प्रतिभा, रचनात्मक अभिव्यक्ति और विचार भी संजोए गए हैं। इस प्रकार यह पत्रिका हमारे सामूहिक बौद्धिक और सृजनात्मक योगदान का जीवंत दस्तावेज है। हमें विश्वास है कि इस मंच के माध्यम से कर्मचारी न केवल अपनी अभिरुचियों को प्रकट करेंगे, बल्कि राजभाषा हिंदी को व्यवहारिक जीवन और कार्यालयीन कार्यों में और अधिक सशक्त बनाएंगे।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों में भी सहज, सरल और प्रभावी रूप से उपयोग में लाएँ। सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटलीकरण के युग में हिंदी की अभिव्यक्ति शक्ति और भी प्रासंगिक हो गई है। यदि हम संकल्पपूर्वक प्रयास करें तो निश्चित ही राजभाषा हिंदी अपने उद्देश्य की पूर्ति करते हुए राष्ट्र की प्रगति और प्रशासन की पारदर्शिता में अमूल्य योगदान देगी।

अंत में, मैं इस पत्रिका के संपादकीय मंडल और सभी सहयोगियों को बधाई देता हूँ, जिनके प्रयास से यह अंक सफलतापूर्वक प्रकाशित हो सका है। आशा है कि "*यथार्थ*" निरंतर नई ऊँचाइयाँ छुएगी और हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

(डॉ.योगेश गुलाबराव काले)

इंदिरा भवन, सिविल लाईस,नागपुर - 440 001
दूरभाष: (0712) 2560961
ई-मेल: ccom@ibm.gov.in/ddr.hindi@ibm.gov.in
वेबसाईट : http://ibm.gov.in

Indira Bhavan, Civil Lines, Nagpur-440 001
Telephone: (0712) 2560961
e-mail: ccom@ibm.gov.in/ddr.hindi@ibm.gov.in
Website: http://ibm.gov.in

डॉ. पुखराज नेणिवाल

खान नियंत्रक (पूर्वांचल)

पीएचडी (खनन अभियांत्रिकी), एमबीए (मानव संसाधन प्रबंधन), पीजी डिप्लोमा (पर्यावरणीय कानुन), प्रथम श्रेणी सक्षमता प्रमाण पत्र (कोयला एवं धात्विक खदानें)

भारत सरकार
खान मंत्रालय
भारतीय खान ब्यूरो

खान नियंत्रक की कलम से....

प्रिय पाठकों,

भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका *"यथार्थ"* के तेबीसवें संस्करण के प्रकाशन पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। यह पत्रिका न केवल हमारे विभागीय कार्यों, उपलब्धियों एवं गतिविधियों का दस्तावेज है; बल्कि यह हमारे विचारों, दृष्टिकोण तथा अनुभवों को साझा करने का एक सशक्त मंच भी है।

भारतीय खान ब्यूरो देश की खनन और खनिज क्षेत्र की सतत एवं संतुलित प्रगति के लिए निरंतर प्रयासरत है। हमारी प्राथमिकता केवल खनिज संसाधनों के गवेषण और उनके दोहन तक सीमित नहीं है, बल्कि इन संसाधनों का उपयोग पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हुए, स्थानीय समुदायों के सामाजिक-आर्थिक विकास के साथ जोड़ना भी है। इस दिशा में हम तकनीकी नवाचार, पारदर्शिता तथा नियमों के पालन को सुनिश्चित कर देश की ऊर्जा और आधारभूत संरचना आवश्यकताओं की पूर्ति में अपना योगदान दे रहे हैं।

"यथार्थ" पत्रिका हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की रचनात्मकता और बौद्धिक क्षमता का दर्पण है। इसके माध्यम से हम न केवल खनन क्षेत्र की नवीनतम जानकारी साझा करते हैं, बल्कि साहित्य, संस्कृति और सामाजिक मूल्यों से जुड़े विषयों को भी स्थान देते हैं। मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका सभी सहकर्मियों को नई प्रेरणा प्रदान करेगी और उनके भीतर नवीन सोच एवं सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेगी।

आज के परिवर्तित वैश्विक परिदृश्य में खनिज क्षेत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने में खनन क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, भारतीय खान ब्यूरो अपने कार्यों को और अधिक दक्ष, पारदर्शी एवं उत्तरदायी बनाने के लिए कटिबद्ध है।

अंत में, मैं संपादकीय टीम और सभी सहयोगियों को इस अंक की तैयारी के लिए धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका पाठकों को सार्थक जानकारी और प्रेरणा प्रदान करेगी।

सादर,

[**डॉ. पुखराज नेणिवाल**]
खान नियंत्रक (पूर्वांचल)

सी. पी. -13, सेक्टर - 5, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता – 700 091 फोन- 033 23673618; ईमेल - zo.kol@ibm.gov.in

संपादक का संदेश

प्रिय पाठकों,

भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर की गृह पत्रिका "*यथार्थ*" के इस अंक को आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष और संतोष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका केवल हमारे विभागीय कार्यों और उपलब्धियों का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि यह हमारे सामूहिक प्रयासों, रचनात्मक विचारों और सृजनशील अभिव्यक्ति का जीवंत दर्पण भी है।

खनिज संपदा किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति की आधारशिला होती है। भारतीय खान ब्यूरो सदैव इस दिशा में अग्रसर रहा है कि खनिज संसाधनों का वैज्ञानिक एवं सतत दोहन हो तथा पर्यावरण संरक्षण के साथ औद्योगिक विकास का संतुलन बना रहे। इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल अपनी गतिविधियों, योजनाओं और उपलब्धियों को पाठकों तक पहुँचाते हैं, बल्कि खनन क्षेत्र से जुड़ी नवीनतम जानकारियों, अनुसंधान तथा अनुभवों को भी साझा करते हैं।

"*यथार्थ*" केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि विचारों का ऐसा मंच है जो हम सभी को प्रेरित करता है कि हम अपने कर्तव्यों को और अधिक दक्षता, समर्पण एवं प्रतिबद्धता के साथ निभाएँ। इसमें सम्मिलित लेख, कविताएँ, अनुभव और शोध आलेख हमारे सहकर्मियों की रचनात्मक क्षमता और प्रतिभा का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। यह देखकर गर्व होता है कि हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्यिक और बौद्धिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं।

भुवनेश्वर इकाई की यह पहल न केवल आंतरिक संवाद को मजबूत करती है बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत कर्मचारियों के बीच विचारों का आदान-प्रदान भी सुनिश्चित करती है। यह पत्रिका आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक महत्वपूर्ण दस्तावेज सिद्ध होगी, जिसमें हमारे प्रयासों और उपलब्धियों का लेखा-जोखा सुरक्षित रहेगा।

मैं इस अवसर पर उन सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका की तैयारी में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से योगदान दिया। उनके अथक परिश्रम और रचनात्मक सहयोग से ही यह अंक संभव हो पाया है। साथ ही, मैं पाठकों से अपेक्षा करता हूँ कि वे अपने बहुमूल्य सुझाव और रचनाएँ हमें प्रेषित करते रहें, ताकि "*यथार्थ*" की गुणवत्ता और उपयोगिता निरंतर बढ़ती रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं इस अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका आपके लिए प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

अरूण कुमार

उपसंपादक का संदेश

प्रिय पाठकों,

मुझे यह हर्ष का विषय है कि भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर की गृह पत्रिका "*यथार्थ*" का नवीनांक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे विभाग की गतिविधियों, उपलब्धियों एवं योजनाओं का दस्तावेज है, बल्कि यह हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा का मंच भी है।

खनन क्षेत्र देश की आर्थिक प्रगति में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आज जब सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है, तब खनिज संसाधनों के वैज्ञानिक और संतुलित उपयोग की जिम्मेदारी हमारे कंधों पर और भी अधिक बढ़ जाती है। इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल विभागीय कार्यों को रेखांकित करते हैं, बल्कि खनन क्षेत्र की नई तकनीकों, अनुसंधानों और चुनौतियों पर भी प्रकाश डालते हैं।

यथार्थ केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि विचारों और अनुभवों का संगम है। यह हमारे सहकर्मियों को अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है और साथ ही हमें एक-दूसरे से सीखने, प्रेरणा लेने और सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाती है। इस अंक में विविध लेख, कविताएँ, अनुभव-साझा और रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं, जो न केवल ज्ञानवर्धक हैं, बल्कि मनोरंजक भी हैं।

मैं इस अवसर पर सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपने लेखन और योगदान से इस अंक को समृद्ध बनाया। विशेष धन्यवाद संपादकीय टीम के उन सदस्यों को, जिन्होंने परिश्रमपूर्वक इस पत्रिका को आकार दिया। आशा है कि *यथार्थ* का यह अंक आप सभी को ज्ञान, प्रेरणा और आनंद प्रदान करेगा।

आपके सुझाव और विचार हमारे लिए अमूल्य हैं। हमें विश्वास है कि आपके सहयोग और सहभागिता से *यथार्थ* निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करता रहेगा।

सादर,
विक्रम प्रकाश देशपांडे

भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय- एक नज़र

उड़ीसा राज्य में महत्वपूर्ण खनिजो की उपलब्धता को देखते हुए भारत सरकार ने उड़ीसा राज्य के लिए अलग से भारतीय खान ब्यूरो के क्षेत्रीय कार्यालय का गठन वर्ष 1998 में किया गया। वर्तमान में क्षेत्रीय कार्यालय अपने भवन, प्लॉट नंबर 149, पोखरिपुट, भुवनेश्वर पिन-751020 से संचालित है। भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय का अधिकार क्षेत्र पूरा ओडिशा राज्य है।

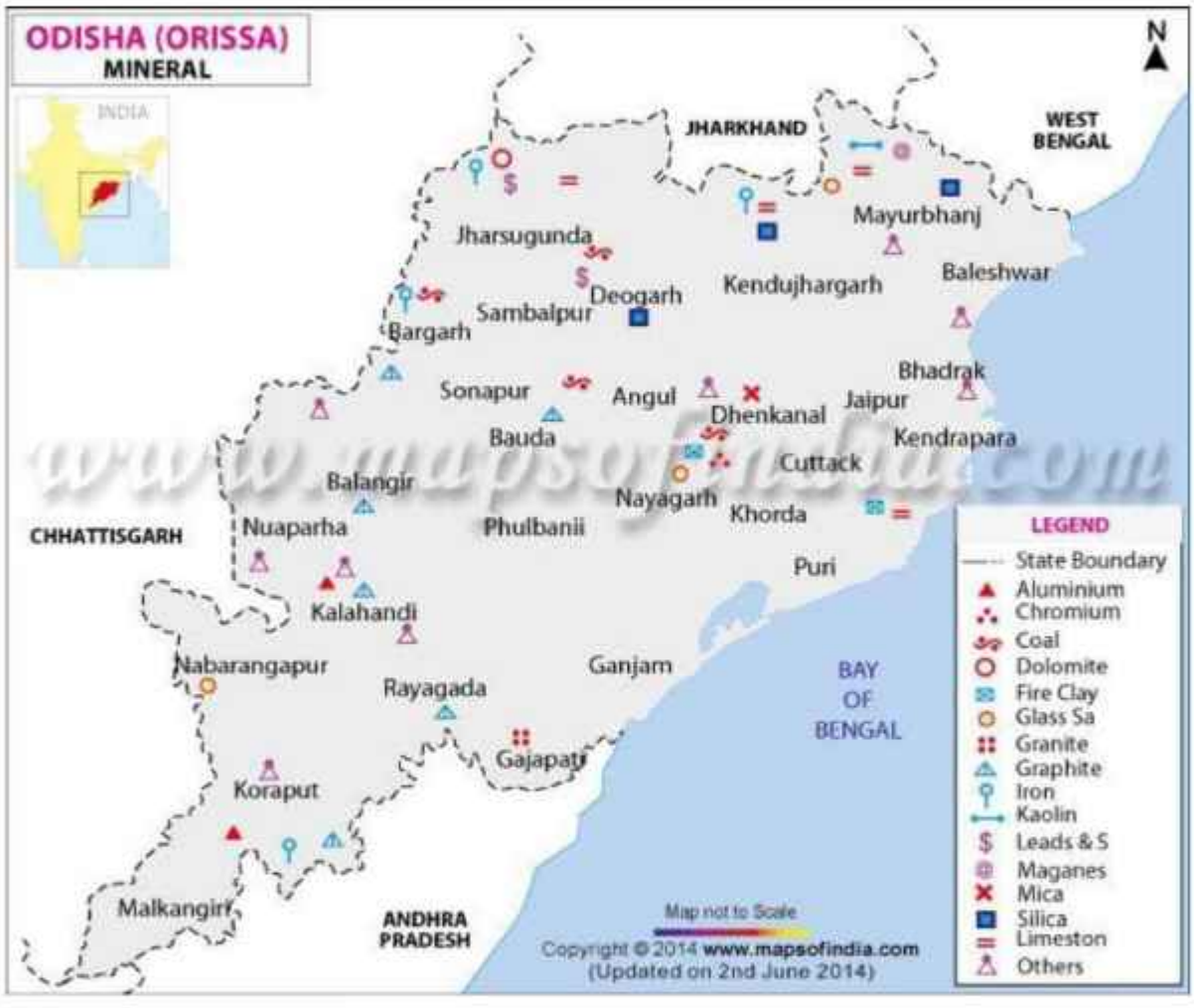

ओडिशा भूविज्ञान एवं खनिज स्थिति:-

पूर्वी भारत में ओडिशा राज्य, 30 जिलों में विभाजित है और इसकी सीमा 04 राज्यों से घिरी हुई है, भूगर्भीय रूप से यह पूर्वी घाट के भारतीय ढाल में सबसे महत्वपूर्ण इलाकों में से एक है, जिसमें आर्कियन से लेकर हाल की उम्र तक के लिथोलॉजिकल अनुक्रम शामिल हैं।प्रकृति ने ओडिशा राज्य को कोयला, लौह अयस्क, मैंगनीज, बॉक्साइट, क्रोमाइट भरपूर रूप से प्रदान किया है। राज्य रूबी के संसाधन का देश में एकमात्र उत्पादन करता है। यह देश के 96% क्रोमाइट, 93% निकल अयस्क, 90% पीजीएम धातु, 69%

कोबाल्टअयस्क, 51% बॉक्साइट, 44% मैंगनीज, 34% लौह अयस्क (हेमेटाइट), 25% सिलिमेनाइट, 24% फायरक्ले, 23% पायरोफिलाइट, 20% वैनेडियम अयस्क, 17% अभ्रक, और 10% डोलोमाइट संसाधन है। परमाणु ऊर्जा विभाग, के अनुसार, यहा 150.62 मिलियन टन रूटाइलसंसाधनोंउपलब्ध है। प्रमुख खनिजों से रॉयल्टी उपार्जन राज्य के राजस्व का एक बड़ा हिस्सा है।खनिज अनुसार ओडिशाकासंसाधन निम्न प्रकार है।

क्र.स.	खनिज	मिलियन टन	भारत में कुल खनिज संसाधन	ओडिशा कासंसाधन	% भारत
1	कोयला	मि.टन	315149	80840	26%
2	लोहा (हेमेटाईट)	मि.टन	22486	7558	34%
3	लोहा (मैग्नेटाईट)	मि.टन	10789	0.1	0%
4	मैगनीज	मि.टन	495.874	216	44 %
5	क्रोमाईट	मि.टन	344	331	96 %
6	लाईमस्टोन	मि.टन	203224	2121	1 %
7	डोलोमाईट	मि.टन	8415	849	10%
8	बाक्साईट	मि.टन	3896	1994	51%
9	टिन अयस्क	मि.टन	83.7	1	1%
10	ग्रेफाईट	मि.टन	195	19	10%

*श्रोत IMYB 2019

लौह अयस्क (हेमेटाइट) के भंडार क्योंझर, सुंदरगढ़, मयूरभंज, और जाजपुरजिलों में मुखय रूप से स्थित हैं। जबकिलौह अयस्क (मैग्नेटाइट) केवल मयूरभंजजिले में उपलब्ध है।क्रोमाइटबालासोर, कटक, ढेंकनाल, जाजपुर और क्योंझरमे मिलता हैं।सुकिंडा और नुआसाहीअल्ट्रामैफिकबेल्ट के क्रोमाइट देश के क्रोमाइटसंसाधनों का 95% हिस्सा हैं।बॉक्साइटराज्यके बलांगीर, कालाहांडी, कंधमाल, क्योंझर, कोरापुट, मलकानगिरी, रायगढ़ और सुंदरगढ़ जिलोंपाया जाता हे। बरगढ़, बौंध, बलांगीर, क्योंझर, कोरापुट, मयूरभंज, संबलपुर और सुंदरगढ़ जिलों में चीनी मिट्टीइसके अलावा, कोयला इब नदी घाटी और तालचेर कोयला क्षेत्र, ढेंकनालजिले में मिलता है। कालाहांडी और संबलपुरजिलों में गार्नेट; बरगढ़, बौंध, बलांगीर, कालाहांडी, कोरापुट, नुआपाड़ा और रायगढ़ जिलों में ग्रेफाइट; बरगढ़, कोरापुट, मलकानगिरी, नुआपाड़ा, संबलपुर और सुंदरगढ जिलों में चूना पत्थर;बलांगीर, क्योंझर, कोरापुट, रायगढ़, संबलपुर और सुंदरगढ़ जिलों में मैंगनीज अयस्क; गंजम और संबलपुरजिलों में सिलीमेनाइट;बलांगीर और कालाहांडीजिलों से माणिक और पन्ना मिलने की सूचना है।सुंदरगढ़ जिले में चांदी; कोरापुट और मलकानगिरीजिलों में टिन धातु का प्लेटिनम समूह पाया जाता है।

भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय के क्रियाकलाप

1) खनन क्षेत्रों में खनिज संरक्षण एवं विकास नियमावली 2017 के प्रावधानों का अनुपालन
2) खनन योजनाओं का अनुमोदन करना
3) खनन क्षेत्र में अनुमोदित खनन योजना के अनुसार खनन कार्यों का प्रतिपादन करवाना
4) अंडरग्राउंड खानों के स्टॉपिंग का अनुमोदन देना
5) खनन क्षेत्रों में खान पर्यावरण एवं खनिज संरक्षण का प्रचार एवं प्रसार करना
6) खानों की स्टाररेटिंग का वैलिडेशन करना
7) खान एवं खनिज से संबंधित डाटा का संग्रह कर भारत सरकार को उपलब्ध कराना
8) खान मालिकों को खनिज उत्खनन के लिए विज्ञानिक विधियासे अवगत कराना
9) राज्य सरकार को खनन विकास एवं खान ब्लॉकनीलामी में सहयोग करना

क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा विगत वर्षों में किए गए निरीक्षण निम्न प्रकार है ।

वर्ष	निरीक्षण का लक्ष्य	निरीक्षण
2023-24	128	145
2022-23	119	132
2021-22	108	145
2020-21	65	97
2019-20	200	201
2018-19	90	118

राज्य मे कुल संचालित खनन/असंचालित खनन पट्टों की संख्या दिनांक -1/4/2024

खनिज	संचालित खनन पट्टे /खान	असंचालित खनन पट्टे	कुल
लौह अयस्क	42	02	44
लौह अयस्क एवं मेंगेनीज	20	04	24
मेंगेनीज	04	02	06
क्रोमाईट	12	02	14
बक्साईट	04	0	04
चुनापत्थर	07	0	07
ग्राफ़ाईट	06	03	09
जेमस्टोन	0	09	09
टिन	0	01	01
कुल	95	23	118

खनिजों का वर्ष-वार उत्पादन दस लाख टन में -(मिलियन टन)

खनिज	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
लौह अयस्क	107.29	122.62	146.029	112.645	144.02	147.644	149.56
मैगनीज	0.62	0.47	0.5337	0.480	0.51	0.644	0.65
क्रोमाईट	3.72	4.044	3.93	2.772	3.78	3.57	3.15
बाक्साईट	11.5	15.47	15.48	15.684	16.53	17.4	17.59
चूनापत्थर	5.22	5.041	5.88	7.739	7.37	6.55	8.94

विगत वर्षो मेखनिज ब्लॉकनीलामी का विवरण निम्न प्रकार है।

खनिज	खनिज ब्लॉकनीलामी	चालू खनिज ब्लॉक	नोट
लौह अयस्क	25	15	1 नया 14 पुराना
लौह अयस्क एवं मैगनीज	08	05	2नये क्षेत्र06 पुराने पट्टे
मैगनीज	02+01-CL	02	2 पुराने पट्टे
क्रोमाईट	03	03	3 पुराने पट्टे
चूनापत्थर	04	0	4नये क्षेत्र
ग्रेफाईट	02	0	2नये क्षेत्र
कुल	48	25	1 नया 24 पुराना

विगत दस वर्षोमेखनन क्षेत्र से प्रधान खनिजो से राज्य के राजस्व के प्राप्ती निम्न प्रकार रही हे

क्र स	वर्ष	राजस्व रु करोड़
1	2021-2022	49859.12
2	2020-2021	13918.19
3	2019-2020	11019.86
4	2018-2019	10479.12
5	2017-2018	6176.91
6	2016-2017	5134.82
7	2015-2016	5797.97
8	2014-2015	5335.05
9	2013-2014	5519.58
10	2012-2013	5679.35

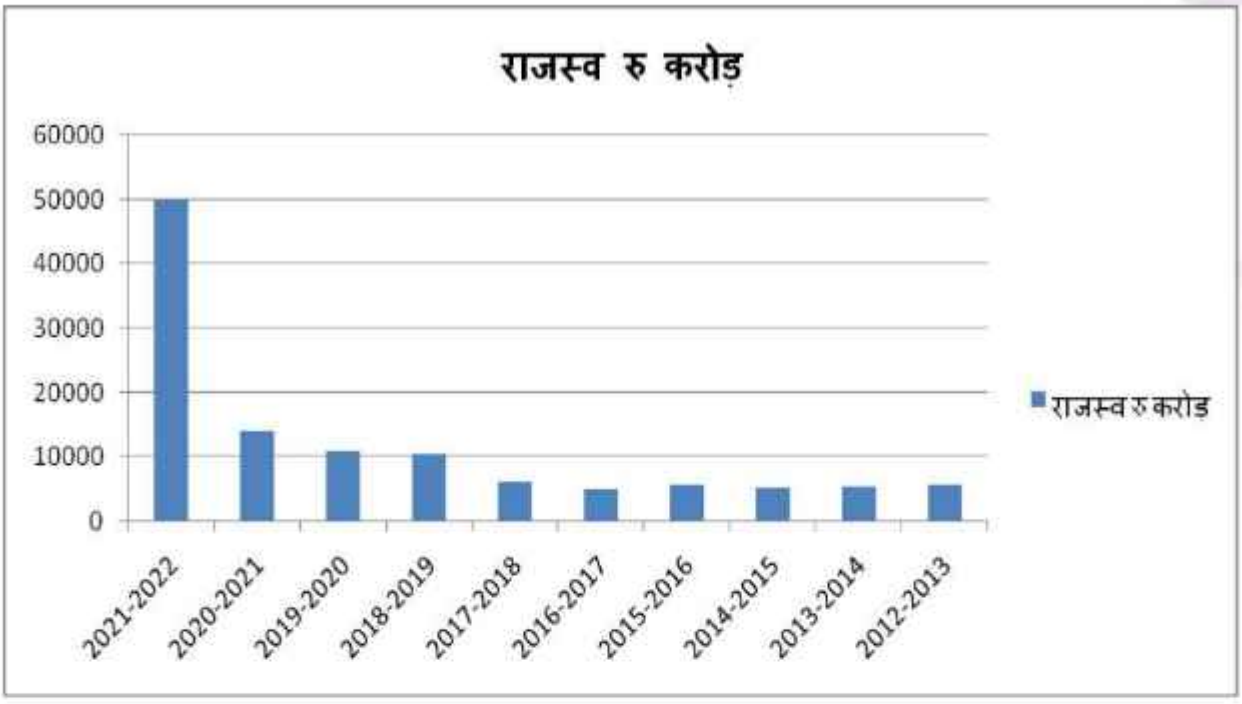

(राज्य सरकार को खनोजों से प्राप्त राजस्व करोड़ोमे)

वर्ष 2022 और 2030 के बीच समाप्त हो रही खनन पट्टो की जानकारी जो नीलम किए जाएगे-

अ) लीज 31/3/2025 को समाप्तहोने वाले खनन पट्टे।

क्र.स.	खान/लीज का नाम	लीज धारक	कोड / क्षेत्र	ग्रांट दिनांक	समाप्ति तिथि	रिजर्व टन में	संसाधन टन में
1	गंडाबहाली	पी सी अग्रवाल	28ORI24005	15 फरवरी 2005	14 फरवरी 2025	180000	69592
2	किर्किटा / गंडाबहाली	पी सी अग्रवाल	28ORI24006	15 फरवरी 2005	14 फरवरी 2025	160000	74490
3	धारुरा-कुकुडा	आर ए जालान	38ORI13005	21 फरवरी1974	20 फरवरी 2024	40000	0
4	अनाजोरी	कुनाल किशोर दास	40ORI27002	15 फरवरी 2005	13 फरवरी 2024	70000	23436
5	कुटिंगापदर	माहेश्वरीजेम्स(प्रा.) लि.	86ORI07010	12 फरवरी 2005	11 फरवरी 2025	614.1 kg	1003.7 kg
6	देदर	देबराज मिहिर	86ORI07008	7 जून 2003	5 जून 2023	1000 kg	100 kg
7	लावन्येश्वर	देबराज मिहिर	86ORI07004	25 फरवरी 2002	24 फरवरी 2022	100kg	100 kg
8	किर्किटा	डी के अग्रवाल	28ORI24007	1 अक्टूबर 1997	14 फरवरी 2025	32216	8191

ब) लीज 31/3/2030 को को समाप्तहोने वाले खनन पट्टे।

क्र. स.	खान/लीज का नाम	लीज धारक	सकल क्षेत्र	स्थिति	कुल रिजर्व टन में	वार्षिक उत्पादन 2019-20 में LT (MT)
1	डुंगुरी	बरगढ सीमेंट लि.	502.2150	कार्य चालू	29.43	1.269155
2	खंद्वंध	टाटा स्टील लि.	978.0000	कार्य चालू	225.51	4.110168
3	कातामाटी	टाटा स्टील लि.	403.3240	कार्य चालू	105.61	3.853128
4	जोडा पश्चिम	टाटा स्टील लि.	1437.7190	कार्य चालू	6.34	0.115632
5	बामेबारी	टाटा स्टील लि.	464.0000	कार्य चालू	7.88	0.056176
6	जोडा पूर्व	टाटा स्टील लि.	671.0930	कार्य चालू	220.59	11.3881
7	गुरुंडा और त्रिंग्पहाड	टाटा स्टील लि..	169.0000	कार्य चालू	4.97	0.067012

****

भारत सरकार/ **GOVERNMENT OF INDIA**

खान मंत्रालय/ **MINISTRY OF MINES**

भारतीय खान ब्यूरो/ **INDIAN BUREAU OF MINES**

क्षेत्रीय खान नियंत्रक का कार्यालय

OFFICE OF THE REGIONAL CONTROLLER OF MINES

हिंदी कार्यशाला रिपोर्ट

दिनांक 20.05.2025

क्षेत्रीय कार्यालय,भुवनेश्वर

Regional Office, Bhubaneswar

भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर में, प्रथम तिमाही के लिए, दिनांक 20 मई, 2025 को, राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियमों , नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन सभागार में किया गया। इस कार्यशाला में बड़ी संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी ने भाग लिया ।

इस अवसर पर गणमान्य अतिथि के रूप में संस्थान के क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री अरुण कुमार की उपस्थिति प्रेरणादायी रही। कार्यशाला का उद्घाटन समारोह दिनांक 20.05.2025 को पूर्वाह्न 10.30 बजे क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री अरुण कुमार एवम अतिथि वक्ता श्री रविन्द्र कुमार दूबे, प्रवक्ता हिंदी, केन्द्रीय विद्यालय नंबर 1, शहीद नगर, भुवनेश्वर एवं हिंदी संपर्क अधिकारी/सहायक खान नियंत्रक श्री विक्रम देशपांडे, द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया । कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्री श्रीनाथ राज ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत किया तथा कार्यशाला के

दौरान होने बाले व्याख्यान के बारे में सभी से अवगत कराते हुए बताया कि उसे कैसे हम लोग अपने कार्यालय के दैनिक कार्य में उपयोग कर सकते है ।

कार्यशाला का प्रथम व्याख्यान 11.00 बजे से 12.45 तक "कार्यालय में शुद्ध हिंदी लेखन का तरीका" विषय पर केन्द्रीय विद्यालय भुवनेश्वर के हिंदी प्रवक्ता श्री रविन्द्र कुमार दूबे, द्वारा दिया गया।

"राजभाषा नियम अधिनियम एवं हिंदी लेखन का तरीका" पर व्याख्यान देते हुए "श्री रविन्द्र दूबे"

जिसमें उन्होंने राजभाषा से जुड़े सभी नियमों को काफी सहजता से समझाते हुए उसके महत्व को समझाया तथा कार्यालय में किस तरह अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें उसके बारे में सभी को बताया तथा कार्यालय में अक्सर उपयोग होने वाले वाक्य से सभी को अवगत कराते हुए उसे कैसे आसानी से हिंदी में लिख सकते है | जिसे प्रशिक्षणार्थियों ने बड़े ही ध्यानपूर्वक सुना और वह उनके लिए काफी फायदेमंद रहा |

दूसरा व्याख्यान 03.00 से 4.45 तक तक " कार्यालय में सरल हिंदी का प्रयोग" पर श्री श्रीनाथ राज, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी द्वारा दिया गया। जिसमें कार्यालय में हिंदी के संदर्भ में विस्तार और सरलता से बताया गया ।

अंत में सभी प्रशिक्षणार्थीयों से प्रतिक्रिया फार्म भी भराया गया

कार्यशाला के अंत में 5.30 बजे तक समापन समारोह क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री अरूण कुमार के अध्यक्षता में संपन्न हुआ समापन कार्यक्रम का संचालन श्री एम. मिश्र, उच्च श्रेणी लिपिक, द्वारा किया गया एवं हिंदी कार्यशाला का ब्यौरा रखा तथा उन्होंने सभी से ज्यादा से ज्यादा हिंदी में कार्य करने की अपील की |

सभी ने हिंदी कार्यशाला के संबध में अपने सुझाव देते हुए कार्यशाला से क्या सीखने को मिला तथा सभी ने बढ़-चढ़ कर कार्यशाला के उपयोगिता को बताया जो

संतोषप्रद रहा । अंत में हिंदी कार्यशाला के दौरान सभी प्रशिक्षणार्थियों को उत्साह व् लगन के साथ धैर्य पूर्वक शामिल होकर प्रशिक्षण लेने के लिए सहायक खान नियंत्रक एवं हिंदी संपर्क अधिकारी श्री विक्रम देशपांडे तथा कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्री श्रीनाथ राज द्वारा सराहना की गई एवं भविष्य में कार्यालय में ज्यादा से ज्यादा हिंदी का उपयोग हो इसकी आशा जताई। अंत में क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री अरूण कुमार ने अपने संबोधन में अधिक से अधिक कार्य हिंदी भाषा के माध्यम से करने पर जोर देते हुए ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता को वर्णित किया तथा सभी नामित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से निष्ठा पूर्वक इस कार्यक्रम में उपस्थित होने तथा इसे सफल बनाने पर धन्यवाद दिया।

कार्यशाला में सभी प्रशिक्षणार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया ।

पर्यावरण संकट

अमरदीप आर्य
भण्डार लिपिक

देश और दुनिया इस समय एक गंभीर पर्यावरणीय संकट के दौर से गुजर रही है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव अब केवल वैज्ञानिक रिपोर्टों तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि आम जनजीवन और किसानों की आजीविका पर इसका सीधा असर देखने को मिल रहा है। कभी अत्यधिक गर्मी, कभी विकराल बारिश, कभी सूखा, तो कभी भयंकर बाढ़ – मौसम की यह असामान्यता एक गंभीर खतरे का संकेत है।

ग्लोबलवार्मिंग से बिगड़ रहा है संतुलन

ग्लोबलवार्मिंग, यानी धरती के तापमान में लगातार वृद्धि, इस पूरे संकट की जड़ है। औद्योगिक क्रांति के बाद से अब तक वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों– जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड– की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है। इसका नतीजा यह है कि पृथ्वी की सतह से निकलने वाली ऊष्मा वायुमंडल में फंस जाती है और तापमान निरंतर बढ़ता जाता है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार, पिछले 50 वर्षों में देश के औसत तापमान में लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है। इसका सीधा असर मौसमी चक्र पर पड़ रहा है।

हीटवेव से जनजीवन अस्त-व्यस्त

इस वर्ष उत्तर भारत के कई राज्यों में तापमान 48 से 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच गया, जिससे कई जिलों में रेड अलर्ट घोषित करना पड़ा। भीषण गर्मी के कारण स्कूलों की छुट्टियाँ बढ़ा दी गईं, निर्माण कार्य रोक दिए गए और अस्पतालों में हीटस्ट्रोक के मामलों में भारी वृद्धि देखी गई। दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में कई लोगों की मौतें भी गर्मी के कारण दर्ज की गईं। खासकर बुजुर्ग, बच्चे और दिहाड़ी मजदूर इस संकट के सबसे बड़े शिकार बनते हैं।

वर्षा का असंतुलन: कहीं सूखा, कहीं बाढ़

जहाँ एक ओर बिहार, झारखंड और उड़ीसा जैसे राज्य मानसून के इंतजार में सूखे की चपेट में आ गए हैं, वहीं दूसरी ओर महाराष्ट्र, केरल और असम में लगातार हो रही भारी वर्षा ने बाढ़ जैसे हालात पैदा कर दिए हैं। केरल के इडुक्की, असम के धेमाजी और महाराष्ट्र के कोल्हापुर में पानी ने

रिहायशी इलाकों को तबाह कर दिया है। हजारों लोग राहत शिविरों में रहने को मजबूर हैं। दूसरी ओर बुंदेलखंड और विदर्भ जैसे इलाकेसूखे की मार झेल रहे हैं, जहाँ किसान पेयजल तक के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

लैंडस्लाइड ने पहाड़ीइलाकों को किया तबाह

हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और सिक्किम जैसे पहाड़ी राज्यों में लगातार भारी बारिश और अत्यधिक निर्माण कार्यों के कारण भूस्खलन (लैंडस्लाइड) की घटनाएँ तेजी से बढ़ी हैं। इस मानसून सीजन में अब तक 70 से अधिक लैंडस्लाइड की घटनाएँ दर्ज की जा चुकी हैं, जिनमें सैकड़ों मकान जमींदोज हो चुके हैं और कई लोगों की जान भी जा चुकी है। विशेषज्ञों का मानना है कि पहाड़ों में अनियोजित निर्माण और वनों की कटाई इस संकट को और गहरा बना रहे हैं।

कृषि पर भी संकट की छाया

देश की 60% से अधिक आबादी आज भी कृषि पर निर्भर है, लेकिन पर्यावरणीय असंतुलन ने खेती-किसानी को बहुत हद तक अस्थिर बना दिया है। अत्यधिक गर्मी और बारिश की अनिश्चितता के कारण फसलों का उत्पादन लगातार घट रहा है। इस वर्ष खरीफ की फसल में 20% तक की गिरावट दर्ज की गई है। धान और दालों की बुवाई समय पर न हो पाने से किसानों को भारी नुकसान हुआ है। महाराष्ट्र, पंजाब और हरियाणा में कई किसानों ने फसल बीमा के बावजूद पर्याप्त मुआवजा न मिलने पर आत्महत्या तक कर ली।

विशेषज्ञों की राय

पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ. राधिका मेहता का कहना है, *"जलवायु परिवर्तन की गति अब पहले से कहीं अधिक तेज़ हो चुकी है। यदि वैश्विक स्तर पर कठोर कदम न उठाए गए, तो आने वाले वर्षों में स्थिति और भयावह हो सकती है। भारत जैसे कृषि-प्रधान देश को विशेष रूप से सतर्क रहना होगा।"*

वे सुझाव देती हैं कि भारत को नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर और पवन ऊर्जा पर अधिक जोर देना चाहिए। साथ ही, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, और टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है।

सरकार और समाज दोनों को उठाने होंगे कदम

भारत सरकार ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए 'राष्ट्रीय कार्ययोजना' बनाई है, जिसमें आठ मिशन शामिल हैं – जैसे राष्ट्रीय सौर मिशन, ऊर्जा दक्षता मिशन और जल संसाधन संरक्षण मिशन। लेकिन इन योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की गति अभी भी धीमी है। सामाजिक स्तर पर भी आम लोगों को जागरूक होने की आवश्यकता है। प्लास्टिक का कम प्रयोग, पानी की बचत, कचरे का उचित

निपटान, और पेड़ लगाना ऐसे छोटे लेकिन महत्वपूर्ण कदम हैं जो बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

खुद को बड़ा समझ बैठे थे हम,
प्रकृति को मात देने चले थे हम।
अब जब आग बरसी है आकाश से,
तब समझे कि कितने नादान थे हम।

वर्तमान पर्यावरण संकट केवल एक मौसम की खराबी नहीं है, यह मानव जाति के अस्तित्व के लिए एक गहरी चुनौती है। यदि अब भी हमने अपने व्यवहार और नीतियों में बदलाव नहीं किया, तो भविष्य में इसका मूल्य अनगिनत जानों, संसाधनों और स्थायित्व की कीमत पर चुकाना पड़ेगा।

समय अब भी हमारे हाथ में है। पर्यावरण की रक्षा केवल सरकार की नहीं, हम सभी की जिम्मेदारी है।

कहानी: "एक ईंट की अहमियत"

अमृत कुमार चौरसिया
अवर श्रेणी लिपिक

एक बार की बात है, एक निर्माणाधीन इमारत में तीन मज़दूर ईंटें लगा रहे थे। एक आदमी ने पास जाकर पहले मज़दूर से पूछा, "तुम क्या कर रहे हो? "पहला बोला: "क्या दिख नहीं रहा? ईंटें जोड़ रहा हूँ। "दूसरे से पूछा गया,"तुम क्या कर रहे हो? "वह बोला: "मैं एक दीवार बना रहा हूँ। "फिर तीसरे से वही सवाल किया गया, "तुम क्या कर रहे हो? "वह मुस्कराया और बोला: "मैं एक शानदार इमारत खड़ी कर रहा हूँ, जो लोगों के लिए काम आएगी। "तीनों वही काम कर रहे थे — पर सोचने का नज़रिया अलग था।

संदेश

हर छोटा कार्य भी बड़ा असर डालता है। अगर हम अपने कार्य को सिर्फ एक 'ड्यूटी' न मानकर, एक "उद्देश्य" के साथ करें, तो उसका परिणाम कहीं अधिक सार्थक होता है।
"टीम वर्क", "दृष्टिकोण" और "ईमानदारी"– यही किसी भी संगठन की असली नींव होती है।

समर्पण भाव

महेश्वर मिश्र,
उच्च श्रेणी लिपिक

मैंने पूछा आप हमेशा दान धर्म क्यों करना चाहते हैं? हमेशा क्यों दूसरों का मदद करते हैं? इससे आप को शांति कैसे प्राप्त होती है? तब वह बोले...

यह करीब 20 वर्ष पहले की बात है। कालेज में अंतिम वर्ष का छात्र था। इच्छा हुई, हरिद्वार जाने के लिये तो हम तीन दोस्त निकल पड़े ।वहां सुबह सुबह पहुंच गये। उन दिनों पास में ज्यादा पैसे नहीं हुआ करते थे। इस लिये हम सब किसी आश्रम में ठहरने के लिये सोचे और एक आश्रम में भी जा के बात किये। उनके नियम के अनुसार वहां जींस टीशर्ट पहनना मना था। आश्रम का अपना ड्रेसकोड कुरता पायजामा है और वही पहनना होगा। रहना और दिन में तीन बार मुफ्त भोजन का व्यवस्था भी थी। जो कुर्ते पायजामें की कीमतसे कम लगी। साथ ही आपको किसी भी प्रकार की एक सेवा देनी होगी। हमारे पास कोई विकल्प नहीं था। उत्सुकता से हम तीनों उनके शर्त पर राज़ी हो गये और एक कमरा ले लिये। अपना एक ड्रेस बैग में रखकर बाहर निकलते, एक जगह जाकर कपड़े बदलते और बाजार घूमने निकल पड़ना हमारा रोज का नियम हो गया।

एक दिन नहा धो कुरता पायजामा पहन के कमरे में बैठे थे, तभी एक अधेड़ व्यक्ति झाड़ू ले कर कमरे में प्रवेश किया और साफ सफाई करने लगा। हमने उनको बता दिया कहां कहां पर झाड़ू लगाना है। वह हमारा चप्पल, बेड़शीट बगैरह सज़ा कर रख दिये और हँसते हुये चले गये। हम लोग सेवा में सब्जी काटते थे और भोजन बनाने में मदद करते थे। हर दिन शाम को

सत्संग होता था। हम जब भी बाहर घूमने जाते थे तो हमारा अपना पुराना ड्रेस पहनते थे और आश्रम के अंदर उनका ड्रेस।

हम तीन दिन घूमने के बाद चौथे दिन शाम को सत्संग में बैठे। उस दिन आश्रम के महंत ने अपना वक्तव्य में सत्संग के महत्व के बारे में बतायें। साधुसंत का संग अत्यन्त दुर्लभ। कितने सत्कर्म करने के पश्चात साधु लोगों का संगत प्राप्त होता है। साधु कृपा प्राप्त होने पर व्यक्ति को भगवान का भी कृपा मिलता है। सत्संग द्वारा आध्यात्मिक प्रगति होता है। व्यक्ति अपने आप कि स्वरूप को जान पाता है। फिर वह बोले कि अब मैं आप लोगों को एक ऐसे व्यक्ति से परिचय करवाउंगा जो हाल ही में एक प्रदेश का डीआईजी पद से स्वेच्छा सेवानिवृत्ति अवसर लेने के बाद हमारे आश्रम में रहते हैं और सेवा दे रहे हैं।

उसके बाद उन्होंने जिन्हें बुलाया और परिचय कराया उन्हें देखकर हम तीनों एक दूसरे को देखते रह गये। वे वही व्यक्ति थे जो पहले दिन हमारे कमरे में झाड़ू ले कर सफाई करने आये थे।

बस, उस दिन से मेरे मन में परिवर्तन आया और मैं अपने आप को समाज के लिये समर्पण कर दिया।

मैं उनकी बातें ध्यान से सुन रहा था.....

******

मधुचंदा मोहंती,
उच्च श्रेणी लिपिक

उपदेशामृत

वाचो वेगं मनसः क्रोधवेगं जिह्वावेगमुदरोपस्थवेगम् ।
एतान्वेगान्यो विषहेत धीरः सर्वामपीमां पृथिवीं स शिष्यात् ॥१॥

एक संयमी व्यक्ति जो बोलने की इच्छा, मन की माँग, क्रोध की क्रियाओं और जीभ, पेट और जननांगों की इच्छाओं को सहन कर सकता है, वह दुनिया भर में शिष्य बनाने के योग्य है।

यह श्लोक रूप गोस्वामी द्वारा उपदेश की अमृतवाणी में कहा गया है। प्रत्येक मनुष्य में ये छह आवेग होते हैं जिन्हें उसे अपने आध्यात्मिक जीवन में प्रगति करने के लिए नियंत्रित करना होगा। ये छह आवेग हैं: वाणी आवेग, मन आवेग, काम आवेग, क्रोध आवेग, जीभ आवेग और पेट आवेग। यदि कोई व्यक्ति इन छह आवेगों पर नियंत्रण कर लेता है, तो वह एक महान आध्यात्मिक गुरु है और वह दुनिया भर में अपने शिष्य बना सकता है।

इन छह इच्छाओं को सहनया नियंत्रित करना होता है। हमारे आचार्य एक क्रम का वर्णन करते हैं, जैसे भक्ति के मंदिर तक जाने वाली सीढ़ियाँ। हमारे जननांग, पेट, जीभ एक सीधी रेखा में हैं। रूप गोस्वामी द्वारा जीभ को नियंत्रित करने पर बहुत जोर दिया गया है, जो पहले पेट को नियंत्रित करने में मदद करती है, और फिर बदले में जननांगों को नियंत्रित करने में मदद करती है। स्वाद के अलावा, जीभ का दूसरा कार्य बोलना है। और फिर, क्रोध । फिर मन आता है, मन को धकेलना। सुख और दुख का स्थान मन है, शरीर नहीं। यदि कोई इनछहों को नियंत्रित कर सकता है~ श्लोक1
कहता है कि कोई ऐसा कर सकता है~ तो वह भक्ति के घर को प्राप्त करता है। व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से योग्य बनता है। इन छहों को नियंत्रित करना बहुत महत्वपूर्ण है।

सर्वप्रथम व्यक्ति को अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए। हम में से प्रत्येक के पास वाणी की शक्ति है; जैसे ही हमें अवसर मिलता है, हम बोलना शुरू कर देते हैं। यदि हम भगवान के बारे में नहीं बोलते, तो हम तरह-तरह की बकवास करते रहते हैं।

लाठी और पत्थर मेरी हड्डियाँ तोड़ सकते हैं, लेकिन शब्द शक्तिशाली हथियार हैं जो किसी को प्रेरित या नष्ट कर सकते हैं। बोलते समय हमारे पास हमेशा एक विकल्प होता है। ईश्वर ने हमें अपने शब्द चुनने की अविश्वसनीय स्वतंत्रता दी है। कुछ शब्द अंधकार और निराशा लाते हैं, और भय

में निहित होते हैं। कुछ शब्द प्रकाश और आशा लाते हैं, और प्रेम में निहित होते हैं। "कोई भी इंसान जीभ को वश में नहीं कर सकता। यह बेचैन और दुष्ट है, घातक जहर से भरी है। कभी यह हमारे प्रभु और पिता की स्तुति करती है, और कभी यह उन लोगों को शाप देती है जिन्हें ईश्वर की छवि में बनाया गया है। और इस प्रकार आशीर्वाद और शाप एक ही मुंह से निकलते हैं।

अपनी ज़ुबान पर नियंत्रण रखने के लिए हमें अपने हृदय, मन और जीभ को प्रतिदिन प्रभु को समर्पित करना होगा। किसी ने कहा था, "अपने शब्दों को थूकने से पहले उन्हें चख लें!" ऐसे शब्द बोलने का अभ्यास करें जो प्रोत्साहित करें, दिलासा दें, शिक्षा दें और प्रेरणा दें। किसी भी अप्रिय शब्द या व्यवहार के लिए क्षमा मांगें।

जीभ के दो मुख्य कार्य हैं - स्वाद लेना और बोलना। शांत और स्थिर जीवन जीने के लिए जीभ के दोनों पहलुओं पर नियंत्रण बेहद ज़रूरी है। अगर हम खाते समय अपनी स्वाद कलिकाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाते, तो हम मोटे, आलसी और अस्वस्थ हो जाते हैं। अगर हम बोलते समय अपनी जीभ पर नियंत्रण नहीं रख पाते, तो इससे कई तरह की जटिलताएँ पैदा होती हैं, जो जीवन में संतुलन बनाने और चीज़ों को ठीक करने की हमारी ऊर्जा को खत्म कर देती हैं।

जहाँ तक जीभ की इच्छाओं का प्रश्न है, हम सभी अनुभव करते हैं कि जीभ स्वादिष्ट व्यंजन खाना चाहती है। सामान्यतः हमें जीभ को उस की इच्छा के अनुसार खाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए, बल्कि प्रसाद देकर जीभ को नियंत्रित करना चाहिए। जीभ या पेट की इच्छा को संतुष्ट करने के लिए रेस्तरां या मिठाई की दुकानों में भोजन नहीं करना चाहिए। यदि हम केवल प्रसादग्रहण करने के सिद्धांत पर टिके रहें, तो पेट और जीभ की वासनाओं को नियंत्रित किया जा सकता है।

इसी प्रकार, जननांगों की वासनाओं, काम आवेग को भी नियंत्रित किया जा सकता है जब उनका अनावश्यक उपयोग न किया जाए।

ध्यान: नियमित ध्यान अभ्यास मन को शांत करने, यौन विचारों की तीव्रता को कम करने और आंतरिक शांति विकसित करने में मदद कर सकता है।

भक्ति: किसी उच्च शक्ति या आदर्श के प्रति समर्पण विकसित करने से ध्यान स्वयं से हटकर किसी बड़ी चीज़ पर केंद्रित हो सकता है, जिससे यौन इच्छाओं की तीव्रता कम हो सकती है।

जप: मंत्रों या पवित्र वाक्यांशों का जाप मन को शांत करने और ऊर्जा को पुनर्निर्देशित करने में मदद करता है।

योग और आसन:कुछ योग अभ्यास, विशेष रूप से वे जो ऊर्जा प्रवाह पर केंद्रित हैं, लाभकारी हो सकते हैं।

श्वास क्रिया:प्राणायाम (श्वास नियंत्रण) जैसी तकनीकें ऊर्जा प्रवाह को नियंत्रित करने और तंत्रिका तंत्र को शांत करने में मदद कर सकती हैं।

आहार: कुछ परंपराएँ बताती हैं कि स्वस्थ उत्सर्जन को बढ़ावा देने वाला आहार तंत्रिका उत्तेजना और यौन इच्छाओं को कम करने में मदद कर सकता है।

उत्तेजनाओं से बचना:यौन रूप से उत्तेजक सामग्री (पत्रिकाएँ, फ़िल्में, आदि) के संपर्क को सीमित करने से उत्तेजनाओं को कम करने में मदद मिल सकती है।

प्रकृति में समय बिताना:प्रकृति से जुड़ना आपको शांत और स्थिर कर सकता है, और संभवतः इच्छाओं की तीव्रता को कम कर सकता है।

अपने विचारों और मन को नियंत्रित करना जीवन का सब से कठिन काम है। मन पर अक्सर बाहरीकारकों का प्रभाव पड़ता है, जैसे रिश्तों की समस्याएँ, गुस्सा, काम का तनाव और घरेलू समस्याएँ। मन हमारा सबसे अच्छा मित्र भी है और सबसे बड़ा शत्रु भी। अनियंत्रित मन सबसे बड़ा शत्रु है और नियंत्रित मन सबसे अच्छा मित्र। लोग अपने अनियंत्रित मन के कारण ही हत्या, बलात्कार जैसे अपराध करते हैं। यदि मन चिंता और अवसाद से भरा है, तो यह मानसिक और शारीरिक रोगों को जन्म देता है। इसलिए मन को नियंत्रित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

अपने मन को आध्यात्मिक रूप से नियंत्रित करने के लिए, ध्यान, माइंडफुलनेस और आत्म-करुणा विकसित करने जैसे अभ्यासों पर ध्यान केंद्रित करें। आध्यात्मिक मार्गदर्शन, ईश्वरीय शक्ति की खोज और आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन भी मददगार हो सकता है। अंततः, लक्ष्य नकारात्मक विचारों और भावनाओं से अलग होना और आंतरिक शांति विकसित करना है।

निष्कर्षतः, हमें यह याद रखना होगा कि यह मानव जीवन अत्यंत दुर्लभ है। हमने मानव जन्म अपनी इंद्रियों के माध्यम से जीवन का आनंद लेने के लिए नहीं लिया है। हमारा जीवन नियमित और आध्यात्मिक प्रगति में व्यतीत होना चाहिए। तभी हम उस दिव्य आनंद और सुख का अनुभव कर सकते हैंजिसके हम हकदार हैं।

****

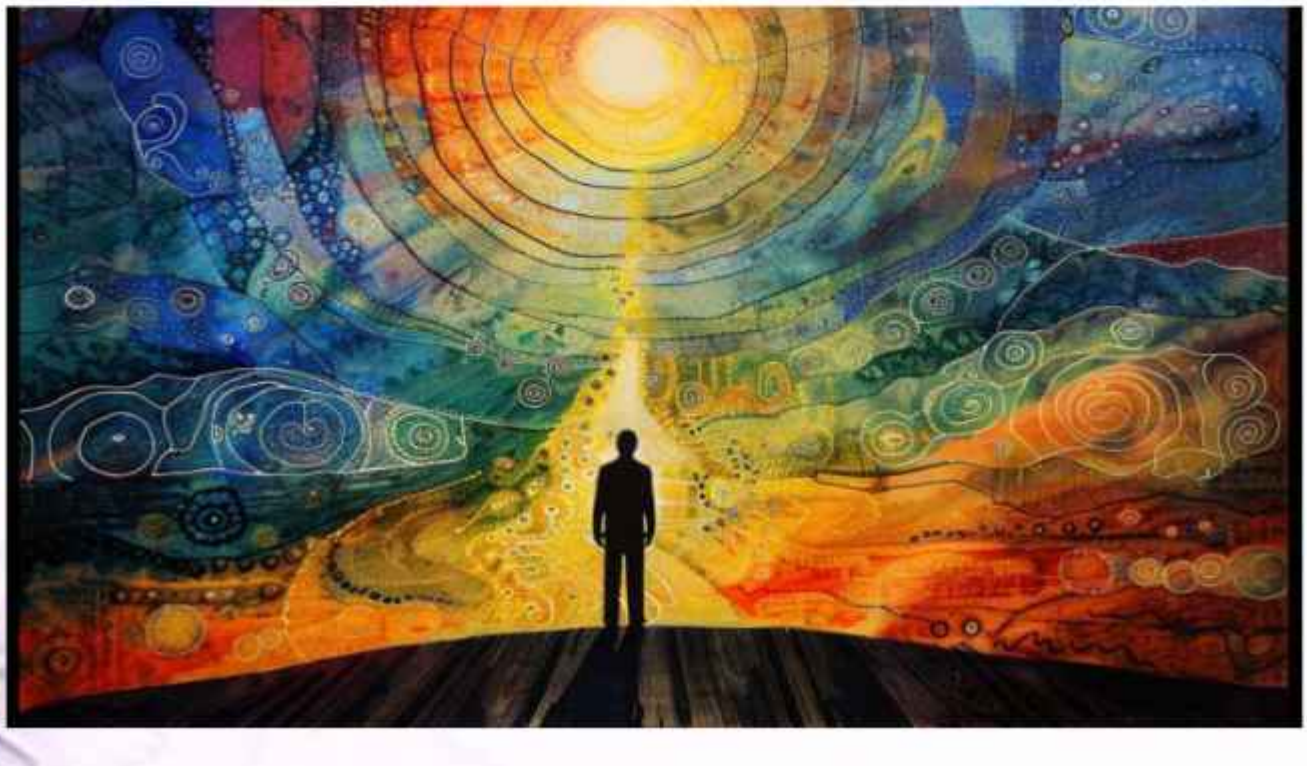

कहानी: "खदान का मेहनती मजदूर"

रविरंजन कुमार
विविध कार्य कर्मचारी

झारखंड के एक छोटे से गाँव में रहने वाला रामप्रसाद एक खदान में मजदूर था। सुबह से शाम तक वह गहरी खदान में उतरा करता, जहाँ दिन की रोशनी भी मुश्किल से पहुँचती थी। उसके चेहरे पर हमेशा मिट्टी और पसीने की झलक होती, पर उसकी आँखों में मेहनत की चमक थी।

रामप्रसाद की जिंदगी आसान नहीं थी। परिवार की रोज़मर्रा की जरूरतें पूरी करने के लिए उसे खदान में दिन-रात मेहनत करनी पड़ती थी। उसका बड़ा सपना था कि वह अपनी मेहनत से परिवार का जीवन बेहतर बनाए।

रामप्रसाद के साथ खदान में कई मजदूर काम करते थे, पर वह दूसरों से अलग था। वह कभी भी काम में कोई कसर नहीं छोड़ता था। वह सुबह सबसे पहले खदान में पहुँचता, सुरक्षा के नियमों का सख्ती से पालन करता और हमेशा नए तरीकों से काम को बेहतर बनाने की कोशिश करता।

एक बार खदान में अचानक एक बड़ा हादसा हो गया। एक साइडवाल (खदान की दीवार) धंसने लगी और कई मजदूर फंस गए। पूरा इलाका दहशत में था। तब रामप्रसाद ने न केवल खुद को बचाने का प्रयास किया, बल्कि अपने साथियों को सुरक्षित बाहर निकालने में भी जुट गया। उसने धैर्य और मेहनत से कई मजदूरों को बाहर निकाला, जबकि खतरा उसके ऊपर मंडरा रहा था।

इस घटना ने कंपनी के अधिकारीयों का ध्यान रामप्रसाद की ओर आकर्षित किया। उन्होंने उसकी बहादुरी और मेहनत को सराहा और उसे "सुरक्षा पर्यवेक्षक" का पद दिया। अब रामप्रसाद न केवल खुद मेहनत करता था, बल्कि अपने साथियों की सुरक्षा और काम की गुणवत्ता का भी ध्यान रखता था।

रामप्रसाद ने अपनी नई जिम्मेदारी बड़ी ईमानदारी से निभाई। उसने खदान में काम करने वालों के लिए सुरक्षा प्रशिक्षण आयोजित किए और नए नियम बनाए ताकि हादसों से बचा जा सके। उसकी मेहनत और लगन से खदान में काम का माहौल पूरी तरह बदल गया।

उसकी कहानी पूरे गाँव में मिसाल बन गई। गाँव के बच्चे उसे देख कर कहते,

"अगर रामप्रसाद ऐसा मेहनती और बहादुर है, तो हम भी मेहनत करके बड़ा बनेंगे।"

रामप्रसाद ने साबित किया कि मेहनत और ईमानदारी से कोई भी मुश्किल काम आसान हो सकता है। चाहे काम कितना भी कठिन क्यों न हो, अगर दिल में लगन और इरादे मजबूत हों, तो सफलता दूर नहीं।

सीख:

कड़ी मेहनत और ईमानदारी से किया गया कोई भी काम छोटा नहीं होता। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी मेहनत करने वाला व्यक्ति अपनी लगन से न केवल अपनी ज़िंदगी बदल सकता है, बल्कि दूसरों के लिए भी प्रेरणा बन सकता है।

राजीव चौधरी
विविध कार्य कर्मचारी

वक्त

बीत गया यह दिन भी ऐसे,
जैसे उस दिन को बीत जाना था।
रोती रह गई वो हर शाम,
जिसे कल मुस्कुराना था।
कल फिर पूछेंगे लोग हमें,
कि वो कैसा जमाना था,
जिसने बनाया वो आशियाना।
उसे ही क्यों भागना था,
सुख गया है बाग वो अब,
जिसमें हर फूल उगाना था।
बीत गया यह दिन भी ऐसे,
जैसे उस दिन को
बीत जाना था.....

माँ

तेरे सपनों का साया है
जिसने खूब सताया है।
तुम भुल गए हो उसको,
जिसने तुम्हें चलना सिखाया है।
वो रोती थी हर बार,
जब भी उसने तुम्हें दुःख में पाया है।
जिस कोख को तुमने दर्द दिया,
उसी की छाती ने तुम्हें दूध पिलाया है।
तुम भूल गए हो उसको,
जिसने तुम्हें जीना सिखाया है।
तुम भूल गए हो उसको,
जिसने तुम्हें चलना सिखाया है।

मायापुर, एक प्राचीन हिंदु धाम

सायान्तनी कुन्डु
विविध कार्य कर्मचारी

मायापुर, एक पवित्र हिंदू धाम, गंगा नदी के तट पर स्थित है। यह जलंगीर में गंगा के संगम बिंदु पर है। चूंकि मेरा गृहनगर शांतिपुर, मायापुर से 55 किमी दूर है, इसलिए मुझे लगभग हर साल इस पवित्र स्थान पर जाने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

पश्चिम बंगाल के नादिया मे मायापुर की यात्रा आध्यात्मिकता और जीवंत सांस्कृतिक अनुभव का एक अनूठा मिश्रण प्रदान करती है। हवा हमेशा हरे कृष्ण मंत्रों की ध्वनि से भरी होती है। दुनिया भर से भक्त यहां इकट्ठा होते हैं। वे आध्यात्मिक परमानंद में गाते और नाचते हैं।एक विशेष रूप से मार्मिक अनुभव शाम की संध्या आरती है जहां सैकड़ों भक्त पूजा करने के लिए इकट्ठा होते हैं। संध्या आरती दिन की सबसे सुंदर गतिविधि है क्योंकि यह मन को शांत करती है और सभी चिंताओं को दूर करती है। वैदिक तारामंडल का मंदिर दुनिया के सबसे बड़े मंदिरों में से एक है श्रील प्रभुपाद का समाधि मंदिर इस्कॉन के संस्थापक ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद को सम्मानित करता है।

मंदिर क्षेत्र में पारंपरिक स्वादिष्ट शाकाहारी भोजन परोसा जाता है और कई आगंतुक पौष्टिक भोजन (प्रसादम के रूप में जाना जाता है) का आनंद लेते हैं। आप गंगा नदी पर नाव की सवारी भी कर सकते हैं और नीचे उतरकर प्राचीन शहर नवद्वीप (चैतन्य महाप्रभु का जन्मस्थान) की यात्रा कर सकते हैं। मुख्य मंदिर क्षेत्र से परे, आप एक शांत मायापुर जीवन का अनुभव करने के लिए आकर्षक गाँव की गलियों, गौशालाओं से गुजर सकते हैं। मायापुर घूमने का सबसे अच्छा समय सर्दियों के मौसम में होता है। मैं हर किसी को परंपरा और आध्यात्मिकता के अनूठे मिश्रण का अनुभव करने के लिए जीवन में कम से कम एक बार इस पवित्र स्थान की यात्रा करने की सलाह दूंगी।

कुमारी आर्या नाथ, पुत्री श्री श्रीनाथ राज, ने मार्च 2025 में, राम चंद्र मिशन, हार्टफुलनेस संस्था द्वारा आयोजित ग्लोबल निबंध प्रतियोगिता में ग्लोबल चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। पुरस्कृत निबंध.....

जब हर चीज आपके विरुद्ध जाती हुई लगे, तब याद रखें कि विमान हवा के विरुद्ध उड़ान भरता है, उसकी दिशा में नहीं- हेनरी फोर्ड

"वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ में बिखरे शूल न हों।
नाविक क्या नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
यदि धाराएं प्रतिकूल न हों।।"

जीवन प्रकृति का गढ़ा एक खूबसूरत वरदान है और संघर्ष उस वरदान हेतु अनिवार्य शर्त। इतिहास के लंबे कालखंड में मानव ने यह बखूबी समझा है कि कुछ किए बिना जयजयकार नहीं होती। सफलता के लिए तलवार की धार पर चलना होता है, बीज को अंकुरण हेतु मिट्टी में गड़ना होता है, चूजे को जीवन के लिए अपनी खोल से लड़ना होता है, सोने को आभूषण बनने हेतु आग में पड़ना होता है। ऐसे हजारों उदाहरण हैं, हमारे चारों ओर, जो हमें बताते हैं कि चुनौतियाँ और संघर्ष हमारे जीवन-विकास और सफलता का अनिवार्य हिस्सा हैं। जीवन में कुछ भी आसानी से नहीं मिलता, और जो चीजें हमें आसानी से मिल जाती हैं, हम उनका मूल्य अक्सर नहीं समझ पाते। जब हम किसी कठिनाई का सामना करते हैं, तो वही कठिनाई हमें अपने अंदर की ताकत और क्षमता को पहचानने का मौका देती है।

कठिन समय में, आत्मविश्वास और साहस सबसे महत्वपूर्ण गुण होते हैं। जब हम हर तरफ से बाधाओं का सामना कर रहे होते हैं, तो हमें खुद पर और अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखना चाहिए। यह विश्वास ही हमें कठिनाईयों का सामना करने की शक्ति देता है। एक हवाई जहाज का पायलट भी तब तक

आत्मविश्वास के साथ उड़ान नहीं भर सकता, जब तक उसे अपने विमान और अपनी क्षमताओं पर भरोसा न हो। उसे पता होता है कि हवाएं तो विपरीत होंगी ही, परन्तु मुझे लक्ष्य तक पहुंचना ही है। ठीक उसी प्रकार से जीवन में भी, कठिनाइयाँ हमारी मानसिक और भावनात्मक स्थिति को परखने का एक अवसर होता है। यदि हम धैर्य और आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं, तो यह हमारे भीतर सकारात्मक बदलाव लाता है। हम अपने आप को अधिक सशक्त और आत्मनिर्भर महसूस करने लगते हैं। यह सच है कि जीवन की कठिनाइयों कभी-

कभी हमें तोड़ने का प्रयास करती हैं, लेकिन अगर हस मजबूत बने रहे, तो यह हमें बेहतर इंसान बनाने का काम करती हैं।

एक बार अकबर ने बीरबल से कहा कि तुम कोई ऐसा वाक्य लिखो, जिससे मुझे सुख और दुख दोनों में संतुलित रहने में मदद मिले। तो बीरबल ने लिखा- महाराज, "यह समय भी बीत जाएगा"। अर्थात समय की अपनी गति है उसका चक्र घूमता रहता है। अच्छा समय भी सदैव नहीं रहता और जब समय विपरीत प्रतीत होता है इसका अर्थ है वह हमारे व्यक्तित्व को संघर्ष और परिश्रम के माध्यम से परिष्कृत कर हमें किसी बड़े लक्ष्य हेतु तैयार कर रहा है।

कहा गया है कि 'हारा वो, जो लड़ा नहीं। कठिनाइयाँ हमें असफलता का अनुभव नहीं कराती, बल्कि वे हमें सफलता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं। हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि संघर्ष ही सफलता की कुंजी है, और विपरीत परिस्थितियों में ही हम अपनी असली क्षमता को पहचान सकते हैं।

** जब हौसला बना लिया उंची उड़ान का,
फिर देखना फिजूल है कद आसमान का **

बेखबर.....

सुतार्षा बड़ुआ
विविध कार्य कर्मचारी

ऐ दिल, ना जाने यू,
खोया हैं क्यों ?
है मंजिल क्या तेरी?

क्या ढूंढ रहा रे तु?
क्या तुझे है खबर,
या है तु बेखबर,

यूँ ही चल दिया कहां?
लेके ख्वाबों का कारवाँ,
छोड़ के पैरों के निशान,

कहां चल दिया रे तु
कहां चल दिया रे तु।

शिवम पाण्डेय
अवर श्रेणी लिपिक

एक अनिच्छुक नेता का उदय

एक ज़माने की बात है, धुंधली पहाड़ियों और भूली-बिसरी परंपराओं के बीच बसे एक शांत कस्बे में, आनंद नाम का एक आदमी रहता था। गाँव के सबसे आलसी व्यक्ति के रूप में जाने वाले आनंद आलस्य भरे जीवन से संतुष्ट था। वह सुबह सोता, दोपहर भटकता और रात भर अंतहीन सपने देखता रहता था। गाँव वालों ने उसे बहुत पहले ही एक ऐसे व्यक्ति के रूप में मान लिया था जो कुछ भी नहीं कर सकता था - विचारों का घुमक्कड़, लेकिन कर्मों का नहीं।

लेकिन वे यह नहीं देख पाए कि उसकी सुप्त सतह के नीचे चुपचाप एक तूफ़ान उठ रहा था। आनंद योग्यता की कमी के कारण आलसी नहीं था - उसका मन प्रश्नों का एक ब्रह्मांड था, जो हमेशा प्राचीन दर्शन, पौराणिक कथाओं, ज्योतिष और अध्यात्म से जुड़े धागों को खींचता रहता था। जब दूसरे लोग मेहनत करते, वह शास्त्र पढ़ता। जब दूसरे घर बनाते, वह विचारों का निर्माण करता।

एक भाग्यशाली शाम, एक भ्रमण करने वाला साधु गाँव में आया। साधु, जो बुद्धिमान और अनुभवी था, उसने एक प्रवचन दिया जिसे सुनने के लिए सैकड़ों लोग इकट्ठा हुए। लेकिन आनंद ही था जिसने उसके शब्दों को चुनौती दी—अहंकार से नहीं, बल्कि जिज्ञासा से। उनका संवाद एक दार्शनिक बहस में बदल गया जो घंटों चली। प्रभावित होकर साधु ने कहा, "युवक, तुम बहुत सोते हो—लेकिन तुम सोए नहीं हो। तुम जाग रहे हो।"

आनंद को ये शब्द बिजली की तरह कौंधे।

अगली सुबह, वर्षों में पहली बार, आनंद सूर्योदय के साथ उठा।

उसने प्राचीन वैदिक ज्योतिष के मार्गदर्शन में अपने स्वयं के पैटर्न का अध्ययन शुरू किया।

उसने ग्रहों की स्थिति का उपयोग भाग्य-कथन के रूप में नहीं, बल्कि एक दर्पण के रूप में किया—उन ऊर्जाओं को समझने के लिए जिन्होंने उसके मन और प्रवृत्तियों को आकार दिया। उसने योगिक अनुशासन के साथ अंतर्मुखी होकर घंटों ध्यान किया और तपस्या की। हर मिथक जिसे वह कभी यूँ ही पढ़ लेता था, अब एक सबक बन गया। महाभारत में अर्जुन के संकोच से उसने दृढ़ संकल्प सीखा। भगवान शिव की वैराग्य से उसने एकाग्रता प्राप्त की। गीता में कृष्ण के वचनों से उसे उद्देश्य मिला।

लोगों ने ध्यान देना शुरू कर दिया। वह कम बोलता था, लेकिन प्रभावशाली ढंग से। वह दूसरों की मदद धन या बाहुबल से नहीं, बल्कि बुद्धि और स्पष्टता से करता था। धीरे-धीरे, गाँव वाले उनसे सलाह लेने आने लगे—शादी, व्यापार, अध्यात्म, यहाँ तक कि राजनीति पर भी। एक जिज्ञासु साधक से शुरू हुआ यह सिलसिला एक समूह बन गया। यह समूह एक आंदोलन बन गया। और एक साल के भीतर, आरव शक्ति से नहीं, बल्कि अपनी उपस्थिति से एक समुदाय का नेतृत्व कर रहा था।

आनंद को अलग बनाने वाला सिर्फ़ ज्ञान नहीं था—बदलने का साहस था। अपने भीतर के सबसे गहरे पहलुओं—अपनी उदासीनता, अपने आराम के दायरे, असफलता के डर—का सामना करना और उन्हें फ़ीनिक्स की तरह जलाकर नए सिरे से उभरना।

उन्होंने सिर्फ़ बुद्धि से नेतृत्व नहीं किया। उन्होंने तालमेल से नेतृत्व किया—कार्य को इरादे से, शब्दों को सच्चाई से और नेतृत्व को सेवा से जोड़कर। वे प्राचीन और आधुनिक, रहस्यमय और व्यावहारिक के बीच सेतु बन गए।

सपनों में खोए हुए व्यक्ति से, आनंद एक ऐसा सपना बन गया जिसे जीने की दूसरों ने ख्वाहिश की।

उनकी यात्रा आसान नहीं थी, लेकिन यह वास्तविक थी—इस बात का प्रमाण कि सबसे आलसी आत्मा भी जाग सकती है, प्राचीन ज्ञान में अभी भी शक्ति है, और सच्चा नेतृत्व संसार में नहीं, बल्कि स्वयं में शुरू होता है।

मेरा प्यार बचपन

धैर्य श्रीनिवास बुडिमे
सुपुत्र श्रीनिवास बुडिमे
सहायक खान नियंत्रक

मैं हूँ छोटा सा बच्चा,
मुस्कान मेरे साथ चलती है।
हर दिन नए खेल खेलने का मन,
हर पल मस्ती में रंगीनी बिखरती है।

पढ़ाई के साथ-साथ खेलना है अच्छा,
दोस्तों के संग बातें करना बड़ा मज़ा।
कभी दौड़ता हूँ, कभी चुपके से हँसता हूँ,
छोटी-छोटी खुशियाँ जी भर के बसता हूँ।

माँ की गोदी में मिलता आराम,
पापा की बातें बनती हैं मेरे काम।
हर दिन एक नया सपना सजाता हूँ,
जीवन को हँसी-खुशी से भरता हूँ।

इस प्यारे बचपन को मैं खूब जीऊँगा,
हर पल को यादगार बनाऊँगा।
क्योंकि ये दिन फिर नहीं आते,
मस्ती से भरपूर ये पल कभी ना जाते।

खनन का समुदायों, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

श्रीनिवास बुडिमे
सहायक खान नियंत्रक

खनन हमेशा से आर्थिक विकास की नींव रहा है, जो उद्योग, ऊर्जा, अवसंरचना और अब भविष्य की प्रौद्योगिकियों के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराता है। भारत और विश्व स्तर पर यह बिजली के लिए कोयला, इस्पात और एल्युमिनियम के लिए लौह अयस्क और बॉक्साइट, तथा नवीकरणीय ऊर्जा, बैटरियों और इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए लिथियम और कोबाल्ट जैसे महत्वपूर्ण खनिज प्रदान करता है। यह खनन को आधुनिक जीवन और स्वच्छ ऊर्जा की ओर संक्रमण के लिए अपरिहार्य बनाता है। सामुदायिक स्तर पर, खनन रोजगार, अवसंरचना और राजस्व लेकर आता है—खनन पट्टियों में सड़कों, विद्यालयों, अस्पतालों और आजीविका के अवसरों का निर्माण होता है। साथ ही, कुछ चुनौतियाँ भी मौजूद हैं: भूमि अधिग्रहण, कृषक और आदिवासी परिवारों का विस्थापन, तथा पुनर्वास की खामियाँ कभी-कभी स्थानीय लोगों तक प्रत्यक्ष लाभ पहुँचने से रोक देती हैं। इनका समाधान करने हेतु जिला खनिज प्रतिष्ठान (DMF) जैसी वैधानिक व्यवस्थाएँ की गई हैं, जो खनन से प्राप्त राजस्व का एक भाग खनन प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल और आजीविका कार्यक्रमों पर खर्च करती हैं। समावेशी योजना और पारदर्शी शासन के साथ खनन सामाजिक रूपांतरण का साधन बन सकता है, जो सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करता है।

खनन का पर्यावरणीय प्रभाव लंबे समय से चिंता का विषय रहा है, क्योंकि ओपन-कास्ट खनन संचालन भूमि, वन, नदियों और वायु की संरचना को बदल देते हैं। धूल, जल प्रदूषण और

आवास हानि अक्सर असंगठित खनन के साथ दिखाई देती है, विशेषकर कोयला पट्टियों, बॉक्साइट पठारों और रेत-समृद्ध नदी तटों पर। हालाँकि, भारत की खनन नीति निरंतर सततता की दिशा में विकसित हुई है। राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 ने "सतत खनन" पर बल दिया, जबकि 2021 , 2023 और 2025 में एमएमडीआर अधिनियम (MMDR Act) में संशोधनों ने कठोर पर्यावरणीय स्वीकृतियों, पुनर्वास उपायों और अधिक स्थानीय भागीदारी को अनिवार्य किया। अनेक कंपनियाँ अब भूमि पुनर्निर्माण, खनन क्षेत्र में वनीकरण, अपशिष्ट जल उपचार संयंत्र और नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश कर रही हैं। आधुनिक तकनीकें–रिमोट सेंसिंग, उपग्रह निगरानी, डिजिटल रिपोर्टिंग और स्वचालित उपकरण–अवैध खनन और प्रदूषण को कम करने में उपयोग हो रही हैं। हरित खनन पहलों जैसे सौर ऊर्जा का उपयोग, टेलिंग्स बैकफिल द्वारा अपशिष्ट को कम करना, और परिपत्र अर्थव्यवस्था प्रथाएँ (जैसे अपशिष्ट से धातु की पुनर्प्राप्ति) यह सिद्ध करती हैं कि उत्पादकता और पारिस्थितिक संरक्षण साथ-साथ चल सकते हैं।

वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर, खनन अब भी आर्थिक विकास का आधार स्तंभ है। यह भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 2-2.5% का योगदान देता है, लाखों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगारों का समर्थन करता है, और निर्माण, ऊर्जा, विनिर्माण तथा अवसंरचना के लिए आवश्यक कच्चा माल उपलब्ध कराता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी यह क्षेत्र सैकड़ों अरब डॉलर का राजस्व उत्पन्न करता है और भविष्य की प्रौद्योगिकियों के लिए आपूर्ति शृंखलाओं को सुरक्षित करता है। साथ ही, यह क्षेत्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है–पर्यावरणीय, सामाजिक और सुशासन (ESG) सिद्धांतों तथा *Initiative for Responsible Mining Assurance* जैसे वैश्विक ढाँचों के अनुरूप। भारत के लिए आगे का रास्ता संतुलन में है: कानूनों को सुदृढ़ करना, पारदर्शी नीलामी सुनिश्चित करना, समुदायों के साथ संवाद करना और तकनीक को अपनाना। ऐसा करके खनन औद्योगीकरण और हरित ऊर्जा संक्रमण को आगे बढ़ा सकता है, साथ ही स्थानीय समुदायों के अधिकारों की रक्षा और वनों, जल और पारिस्थितिक तंत्रों की सुरक्षा भी कर सकता है। भविष्य में, जिम्मेदार खनन केवल संसाधन निकालने तक सीमित नहीं होगा, बल्कि यह पीढ़ियों के लिए आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय–तीनों ही स्तरों पर स्थायी मूल्य निर्माण का मार्ग बनेगा।

****

बिहार स्वास्थ्य विभाग में ANM के कार्य

सोनम कुमारी
(ANM बिहार सरकार)
पत्नी: अमरदीप आर्य, भंडार लिपिक

भारत जैसे विशाल और जनसंख्या-प्रधान देश में स्वास्थ्य सेवाओं का महत्व अत्यधिक है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने में *ANM (Auxiliary Nurse Midwife)* की भूमिका बहुत अहम है। बिहार स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत ANM न केवल स्वास्थ्य सेवाओं का आधार स्तंभ हैं, बल्कि मातृ-शिशु स्वास्थ्य, टीकाकरण, परिवार नियोजन और ग्रामीण स्वास्थ्य योजनाओं को ज़मीनी स्तर तक पहुँचाने में भी उनकी प्रमुख भूमिका होती है।

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य देखभाल

- गर्भवती महिलाओं की *जाँच (ANC)* करना।
- प्रसव पूर्व और प्रसव पश्चात देखभाल उपलब्ध कराना।
- सुरक्षित प्रसव की व्यवस्था करना और प्रसव में सहायता करना।
- शिशुओं का वजन, ऊँचाई और स्वास्थ्य की निगरानी करना।

टीकाकरण कार्यक्रम (Immunization Program)

- बच्चों को पोलियो, खसरा, DPT, BCG जैसे टीके लगाना।
- गर्भवती महिलाओं को TT इंजेक्शन देना।
- राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम को सफल बनाना।

परिवार नियोजन सेवाएँ

- ग्रामीण महिलाओं और पुरुषों को परिवार नियोजन के साधनों की जानकारी देना।
- गर्भनिरोधक गोलियाँ, कंडोम आदि का वितरण।
- स्थायी और अस्थायी गर्भनिरोधक उपायों के लिए प्रेरित करना।

स्वास्थ्य शिक्षा एवं जागरूकता

- ग्रामीण समुदाय को साफ-सफाई, पोषण, पेयजल, स्वच्छता और बीमारियों से बचाव की जानकारी देना।
- बच्चों और महिलाओं में कुपोषण रोकने के लिए सही आहार की सलाह देना।
- स्वास्थ्य संबंधी सरकारी योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुँचाना।

सामुदायिक स्वास्थ्य कार्य

- गाँव में स्वास्थ्य सर्वे करना।
- किसी महामारी (जैसे मलेरिया, डेंगू, कोविड-19 आदि) की स्थिति में जानकारी एकत्रित करना और उचित उपचार की व्यवस्था कराना।
- ग्रामीणों को प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराना।

रिकॉर्ड और रिपोर्टिंग का कार्य

- टीकाकरण, गर्भवती महिलाओं की देखभाल, प्रसव और बीमारियों का सही रिकॉर्ड रखना।
- नियमित रूप से स्वास्थ्य केंद्र और विभाग को रिपोर्ट भेजना।

बिहार स्वास्थ्य विभाग में ANM की विशेष भूमिका

- बिहार की ग्रामीण आबादी लगभग 80% है और वहाँ स्वास्थ्य सुविधाएँ पहुँचाना चुनौतीपूर्ण कार्य है।
- ऐसे में ANM गाँव-गाँव जाकर स्वास्थ्य योजनाओं को लागू करती हैं और लोगों तक सीधी पहुँच बनाती हैं।
- सरकारी योजनाएँ जैसे - *जननी सुरक्षा योजना, मिशन इंद्रधनुष, आयुष्मान भारत योजना* आदि को सफल बनाने में ANM की भागीदारी महत्वपूर्ण है।
- वे डॉक्टर और समुदाय के बीच *कड़ी* का काम करती हैं।

बिहार स्वास्थ्य विभाग में ANM की भूमिका समाज और विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं एवं बच्चों के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। वे स्वास्थ्य सेवाओं की *रीढ़* मानी जाती हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से लेकर गाँव की गली-कूचों तक, ANM अपने सेवाभाव और परिश्रम से राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्था को सुदृढ़ बनाती हैं। वास्तव में, बिहार के स्वास्थ्य तंत्र में ANM की मेहनत और निष्ठा ही मातृ-शिशु मृत्यु दर कम करने, स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने और ग्रामीण समाज को स्वस्थ बनाने में सबसे बड़ी शक्ति है।

खुशियां.....

मास्टर आर्याश -

श्री अमरदीप आर्य, भंड़ार लिपिक, को 27 दिसंबर 2024 को प्रकृति ने पुत्र रत्न से नवाजा है।

भारतीय खान ब्यूरो परिवार की तरफ ने श्री अमरदीप एवं श्रीमती सोनम को हार्दिक शुभकामनाएं।

मास्टर जगजीत (कृष्णा) -

श्री रोहिता सेठी, सहायक खान नियंत्रक, को 13 जुलाई 2025 को प्रकृति ने पुत्र रत्न से नवाजा है।

भारतीय खान ब्यूरो परिवार की तरफ से

श्री रोहिता सेठी एवं श्रीमती निवेदिता प्रियदर्शनी को हार्दिक शुभकामनाएं।

पदोन्नति, स्थानांतरण एवं नवनियुक्ति.....

श्री संजीव कुमार मोहापात्रा, वरिष्ठ खनन भूविज्ञानी का क्षेत्रीय खनन भूविज्ञानी के पद पर पदोन्नति दिनांक 28.05.2025 को हुआ। भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर कार्यालय की ओर से आपको बधाई।

श्री सुब्रत कुमार मुदुली, वरिष्ठ खनन भूविज्ञानी के पद पर भारतीय खान ब्यूरो, गुवाहाटी से स्थानांतरित होकर दिनांक 04.04.2025 को भारतीय खान ब्यूरो भुवनेश्वर में पद ग्रहण किए हैं। भारतीय खान ब्यूरो भुवनेश्वर में आपका स्वागत है।

श्रीमती पोलमी मंडल, संघ लोक सेवा आयोग से चयनित होकर, सहायक खनन भूविज्ञानी, के पद पर दिनांक 30 जनवरी 2025 को भारतीय खान ब्यूरो भुवनेश्वर में कार्यभार ग्रहण किया है। भारतीय खान ब्यूरो परिवार में आपका स्वागत है। श्रीमती मंडल पूर्व में भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, हैदराबाद में कार्यरत थीं।

श्री श्रीनिवास बुडिमे, संघ लोक सेवा आयोग से चयनित होकर, सहायक खान नियंत्रक के पद पर दिनांक 03 अप्रैल 2025 को भारतीय खान ब्यूरो भुवनेश्वर में कार्यभार ग्रहण किया है। श्री बुडिमे पूर्व में MOIL, नागपुर में कार्यरत थे। भारतीय खान ब्यूरो परिवार में आपका स्वागत है।

कुमारी सायंतनी कुंडु, कर्मचारी चयन आयोग से चयनित होकर दिनांक 02.05.2025 को विविध कार्य कर्मचारी के पद पर कार्यग्रहण किया है। भारतीय खान ब्यूरो परिवार में आपका स्वागत है।

श्रीमती सुतार्षा बड़ुया, कर्मचारी चयन आयोग से चयनित होकर दिनांक 22.05.2025 को विविध कार्य कर्मचारी के पद पर कार्यग्रहण किया है। भारतीय खान ब्यूरो परिवार में आपका स्वागत है।

विदाई.....

श्री प्रशांत एस. हेगड़े, क्षेत्रीय खनन भूविज्ञानी का अधीक्षण खनन भूविज्ञानी के पद पर पदोन्नति के पश्चात, दिनांक 06.12.2024 को भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय नागपुर में स्थानांतरण हो गया। वर्तमान में श्री हेगड़े भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय नागपुर के कार्यालय अध्यक्ष का पद सुशोभित कर रहे हैं।

श्री जितेन्द्रिय प्रधान, सहायक खनन अभियंता का स्थानांतरण भारतीय खान ब्यूरो के विजयवाड़ा कार्यालय में हुआ। उन्हें दिनांक 26.03.2025 को कार्यालय से विदाई दी गई।

श्री राजेश कुमार दास, उप खान नियंत्रक का स्थानांतरण भारतीय खान ब्यूरो देहरादून के प्रभारी के रूप में हुआ । उन्हें दिनांक 11.04.2025 को भुवनेश्वर कार्यालय से विदाई दी गई।

ओडिशा में महत्वपूर्ण खनिजों का भविष्य

श्री विक्रम देशपांडे
सहायक खान नियंत्रक

ओडिशा का हरे-भरे वन आवरण प्रसिद्ध रॉयल बंगाल टाइगर सहित विभिन्न प्रकार के वनस्पतियों और जीवों की मेजबानी करता है। देश के मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हुए, ओडिशा के समृद्ध खनिज भंडार में 28% लौह अयस्क, 24% कोयला, 59%बॉक्साइट और भारत की कुल जमा राशि का 98%क्रोमाइट शामिल है, इस प्रकार महत्वपूर्ण खनिजों में एक आशाजनक भविष्य है, जो लौह अयस्क, बॉक्साइट, क्रोमाइट और कोयले के महत्वपूर्ण भंडार रखते हैं, जिससे यह भारत के खनन क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी बन जाता है। राज्य आर्थिक विकास के लिए इन संसाधनों का लाभ उठाने के लिए रणनीतिक रूप से तैनात है, विशेष रूप से स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में उपयोग किए जाने वाले इस्पात और अन्य खनिजों की बढ़ती वैश्विक मांग के साथ। महत्वपूर्ण खनिज क्षेत्र में अपनी क्षमता को साकार करने में निवेश आकर्षित करने, नीतिगत सुधारों को लागू करने और स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देने पर ओडिशा का ध्यान महत्वपूर्ण होगा। ओडिशा के महत्वपूर्ण खनिजों के भविष्य के प्रमुख पहलू हैं:

• **<u>प्रचुर संसाधन</u>**:

ओडिशा में लौह अयस्क, बॉक्साइट, क्रोमाइट और कोयले का विशाल भंडार है, जो इसे भारत में एक प्रमुख खनिज उत्पादक राज्य के रूप में स्थापित करता है।

• **<u>रणनीतिक महत्व</u>**:

राज्य की खनिज संपदा भारत के इस्पात उत्पादन और स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, जहां लिथियम, कोबाल्ट और दुर्लभ पृथ्वी तत्व जैसे खनिज आवश्यक हैं।

•**<u>निवेश के अवसर</u>**:

ओडिशा अनुकूल नीतियों और प्रोत्साहनों के माध्यम से खनन क्षेत्र में निवेश को सक्रिय रूप से आकर्षित कर रहा है, जिसका उद्देश्य आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा देना है।

• **<u>मूल्य वर्धन</u>**:

राज्य खनिज प्रसंस्करण और विनिर्माण पर आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए संसाधन निर्यात से आगे बढ़ने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

• **टिकाऊ प्रथाएं**:

ओडिशा दीर्घकालिक समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए सतत खनन प्रथाओं, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक विकास की आवश्यकता पर जोर दे रहा है।

• **नीति सुधार**:

सरकार खनन कार्यों को सुव्यवस्थित करने, मंजूरी में तेजी लाने और क्षेत्र में पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए सुधारों को लागू कर रही है।

• **अनुसंधान और विकास**:

दक्षता और स्थिरता बढ़ाने के लिए खनन प्रौद्योगिकियों और महत्वपूर्ण खनिज प्रसंस्करण में अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने के लिए पहल चल रही हैं।

• **अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी**:

ओडिशा महत्वपूर्ण खनिजों और प्रौद्योगिकियों तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए अन्य देशों के साथ सहयोग की खोज कर रहा है, जो वैश्विक महत्वपूर्ण खनिज परिदृश्य में खुद को एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर रहा है।

चुनौतियां और अवसर:

• **विकास और पर्यावरण को संतुलित करना**:

ओडिशा को सतत आर्थिक विकास सुनिश्चित करते हुए खनन गतिविधियों के पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों का सावधानीपूर्वक प्रबंधन करने की आवश्यकता है।

•**सामुदायिक जुड़ाव**:

खनन परियोजनाओं की योजना और निष्पादन में स्थानीय समुदायों, विशेष रूप से आदिवासी आबादी को शामिल करना लाभों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करने और सामाजिक संघर्षों को कम करने के लिए आवश्यक है।

• **बुनियादी ढांचा विकास**:

परिवहन नेटवर्क और प्रसंस्करणसुविधाओं सहित बुनियादी ढांचे में निवेश, खनन क्षेत्र के विकास का समर्थन करने और आगे के निवेश को आकर्षित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

•**कुशल कार्यबल**:

खनन और संबंधित उद्योगों में एक कुशल कार्यबल विकसित करना क्षेत्र के विस्तार का समर्थन करने और रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए आवश्यक है।

अंत में, ओडिशा के पास आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने, रोजगार पैदा करने और भारत के ऊर्जा संक्रमण और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में योगदान करने के लिए अपने समृद्ध खनिज संसाधनों का लाभ उठाने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। सतत प्रथाओं, रणनीतिक निवेश और नीति सुधारों पर ध्यान केंद्रित करके, ओडिशा महत्वपूर्ण खनिज क्षेत्र में एक नेता के रूप में खुद को स्थापित कर सकता है और अपने लोगों के लिए एक समृद्ध भविष्य सुनिश्चित कर सकता है।

द सर्किल

श्रीनाथ राज
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

एक व्यस्त सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यालय में एक समूह बैठा था जिसे सहकर्मी "द सर्कल" कहते थे। यह कोई औपचारिक टीम नहीं थी, लेकिन वर्षों से उन्होंने एक अनोखी चीज़ बनाई थी: एक ऐसा बंधन जो पीढ़ियों, कौशल और मानसिकताओं तक फैला हुआ था।

रिया, सिर्फ़ 18, सबसे कम उम्र की थी—जो उत्साह की चिंगारी के साथ एक प्रशिक्षु के रूप में हाल ही में शामिल हुई थी। फिर समीर थे, एक 28 वर्षीय विश्लेषक, जो आँकड़ों में तेज़ लेकिन शब्दों में नरम, हमेशा एक विनम्र मुस्कान के साथ तैयार रहते थे। 35 वर्षीय आरती, समय सीमा और अपने बच्चे के स्कूल के फ़ोन कॉल को शालीनता से संतुलित करती थीं। 50 के करीब पहुँच रहे मनोज के पास दशकों का अनुभव था, लेकिन वे सभी के साथ समान व्यवहार करते थे, उनकी शांत उपस्थिति समूह के लिए एक स्थिर आधार थी।

कार्यालय की दीवारों के अंदर, उनके पेशेवर कौशल पॉलिश किए हुए शीशे की तरह चमकते थे। रिपोर्टें सहजता से तैयार की जाती थीं, डेटा का सटीकता से विश्लेषण किया जाता था, और प्रस्तुतियाँ ऐसे आकर्षण के साथ दी जाती थीं कि सबसे कठोर ऑडिटर भी प्रभावित हो जाते थे। लेकिन यह सिर्फ़ उनका काम नहीं था—जो चीज़ उन्हें अलग बनाती थी वह थी जिस तरह से वे एक-दूसरे के साथ व्यवहार करते थे। विनम्रता कोई नियम नहीं थी; यह उनकी भाषा थी। असहमति में भी, आवाज़ें कोमल और शब्द विचारशील रहे। कार्यकाल के बाद, उनकी दोस्ती ऑफिस के छोटे से मनोरंजन क्लब में भी फैल गई। वे कैरम खेलते थे, कभी टेबल टेनिस, और जब रिया मनोज के खिलाफ गोल करती, जो "बुद्धिमान लेकिन थका हुआ चाचा" होने का दिखावा करता, तो ज़ोर-ज़ोर से जयकार करते थे। समीर अक्सर ऑफिस के बाद चाय के ब्रेक में सबको साथ ले जाता, जबकि आरती वीकेंड मूवी नाइट्स का सुझाव देती। उम्र का अंतर चाय में चीनी की तरह घुल जाता।

फिर भी, इस सामंजस्य के पीछे विविधता की खूबसूरती छिपी थी। उनके दिमाग अलग तरह से काम करते थे: रिया भविष्य के विचारों से भरी होती, समीर तर्क से नीतियों पर सवाल उठाता, आरती व्यावहारिकता का लेंस लगाती, और मनोज अक्सर उन्हें अतीत के सबक याद दिलाते। बैठकों में, इस

मिश्रण से चिंगारी निकलती—कभी बहस, कभी हँसी—लेकिन हमेशा प्रगति होती। उनकी विविधता कोई बाधा नहीं थी; यह उनकी ताकत का गुप्त तत्व था।

दूसरे विभागों के लोग अक्सर आश्चर्य करते थे कि इतना विविधतापूर्ण समूह इतनी सहजता से कैसे काम करता है। शायद यह सम्मान था, शायद दयालुता—या शायद यह साधारण सत्य था कि जहाँ कौशल एक ऑफिस को चलाते हैं, वहीं मानवता ही ऑफिस को घर बनाती है।

और इसलिए, हर दिन, द सर्कल पूरे विभाग को याद दिलाता था कि एक कार्यालय डेस्क और फाइलों से कहीं बढ़कर हो सकता है। यह एक ऐसी जगह हो सकती है जहाँ पीढ़ियाँ मिलती हैं, मन अलग होते हैं, और दिल जुड़ते हैं।

50 की उमके बाद, सुखी जीवन के लिए 5 सूत्र

सलिला दाश
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

प्रस्तावना-

अकसर कहा जाता है कि 50 की उम्र के बाद जीवन की असली परीक्षा शुरू होती है। इस समय शरीर, मन और भावनाओं में कई प्रकार के परिवर्तन दिखाई देते हैं। यदि इस अवस्था में उचित देखभाल न की जाए, तो स्वास्थ्य संबंधी परेशानियाँ और मानसिक तनाव बढ़ सकते हैं। लेकिन कुछ सरल आदतें अपनाकर जीवन को स्वस्थ, संतुलित और सुखी बनाया जा सकता है। आइए जानते हैं ऐसे चार सूत्र-

1- **नियमित व्यायाम और शारीरिक सक्रियता-**

चालीस की उम्र के बाद शरीर का चयापचय धीमा होने लगता है। ऐसे में यदि आलस्य हावी हो जाए तो मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप जैसी बीमारियाँ जल्दी घेर लेती हैं। प्रतिदिन हल्का-फुल्का व्यायाम, योग , पैदल चलना और प्राणायाम को दिनचर्या में शामिल करने से न केवल शरीर चुस्त-दुरुस्त रहता है, बल्कि मन भी प्रसन्न रहता है।

2- **संतुलित पौष्टिक आहार-**

इस आयु में खान-पान की आदतें विशेष महत्व रखती हैं। तैलीय मसालेदार और जंक फूड से दूरी बनाना ही आवश्यक है। हरी सब्जियाँ, ताजे फल अंकुरित अनाज, पर्याप्त पानी और हल्का भोजन स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। नियमित व संतुलित आहार से न केवल शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि ऊर्जा और उत्साह भी बना रहता है।

3- **मानसिक शांति और सकारात्मक सोच-**

पचास के उम्र के बाद प्रायः कार्यस्थल और पारिवारिक जीवन में जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं। तनाव और चिंता भी बढ़ने लगती हैं। ऐसे समय में ध्यान, योग, संगीत, पुस्तक पठन और परिवार के साथ सुखद समय बिताना मानसिक शांति प्रदान करता है। सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास जीवन को सरल और सुखमय बना देता है।

4- **सामाजिक जुड़ाव और आत्मीय संबंध-**

सुखी जीवन के लिए मित्रों और परिवार के साथ जुड़ाव आवश्यक है। अकेलापन और अवसाद से बचने के लिए सुखी और रिश्तों के साथ बने रहना जरूरी है। आत्मीय वार्तालाप साझा अनुभव और सहयोग से जीवन की कठिनाईयाँ सरल हो जाती हैं।

निष्कर्ष-

पचास की उम्र जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ है। यदि इस समय व्यायाम, संतुलित आहार, मानसिक शांति और सामाजिक जुड़ाव को जीवनशैली का हिस्सा बनाया जाए, तो आगे का सफर स्वस्थ, सुखमय और आनंदपूर्ण हो सकता है।

नन्हीं तूलिका.....

मास्टर देव,
भांजा श्री अमृत कुमार चौरसिया
अवर श्रेणी लिपिक

कहानी: "नीति बनाम राजनीति"

अमृत कुमार चौरसिया
अवर श्रेणी लिपिक

साहिल एक बड़ी कॉर्पोरेट कंपनी में जूनियर मैनेजर के पद पर कार्यरत था। वह बेहद मेहनती, ईमानदार और शांत स्वभाव का व्यक्ति था। ऑफिस में सभी उससे अच्छा व्यवहार करते थे, लेकिन वह जानता था कि हर मुस्कान के पीछे हमेशा सच्चाई नहीं होती।

साहिल की टीम में कुछ लोग ऐसे थे जो अपने काम से ज्यादा दूसरों की कमियाँ निकालने में व्यस्त रहते थे। मीटिंग में किसी का आइडिया चुरा लेना, दूसरों की गलतियाँ बढ़ा-चढ़ाकर सीनियर्स को बताना — यह सब "ऑफिस पॉलिटिक्स" का हिस्सा बन चुका था।

शुरुआत में साहिल इन सब बातों से दूरी बनाए रखता था। उसका मानना था कि "काम बोलता है।" लेकिन एक दिन उसकी मेहनत पर किसी और ने क्रेडिट ले लिया। उसका बनाया हुआ प्रेजेंटेशन उसकी टीम के ही एक सहयोगी ने बॉस के सामने ऐसे पेश किया जैसे उसने ही सब कुछ तैयार किया हो। साहिल को बहुत बुरा लगा, पर उसने शिकायत नहीं की। उसने तय किया कि वह भी 'राजनीति' खेलेगा। लेकिन कुछ ही दिन में उसे महसूस हुआ कि यह रास्ता उसकी नैतिकता से मेल नहीं खाता। झूठ, दिखावा और चापलूसी उसे रास नहीं आई।

तभी उसके जीवन में एक मोड़ आया। कंपनी ने एक नई पॉलिसी के तहत सभी कर्मचारियों से फीडबैक लेना शुरू किया, जिसमें यह देखा गया कि कौन कर्मचारी सहयोगी भावना से काम करता है, और कौन केवल दिखावे का माहिर है। साहिल ने हमेशा

अपने साथियों की मदद की थी, उनकी सफलता में खुश हुआ था, और काम में पूरा योगदान दिया था।

फीडबैक रिपोर्ट में साहिल का नाम सबसे ऊपर था। इसके बाद जब प्रमोशन की सूची आई, तो सब चौंक गए – साहिल को सीनियर मैनेजर बना दिया गया था।

वही लोग, जो कभी उसकी मेहनत का क्रेडिट चुराते थे, अब उसे बधाई दे रहे थे।

साहिल ने अपनी पहली टीम मीटिंग में कहा, "ऑफिस पॉलिटिक्स से कभी स्थायी सफलता नहीं मिलती। लेकिन अगर आप ईमानदारी, सहयोग और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें, तो देर से ही सही, पर सफलता जरूर मिलती है।"उस दिन ऑफिस के कई कर्मचारियों ने यह महसूस किया कि राजनीति से ऊपर भी एक नीति होती है – जो भले ही कठिन लगे, पर अंततः वही सही रास्ता होती है।

**** सीख ****

ऑफिस पॉलिटिक्स तात्कालिक लाभ दे सकती है, लेकिन दीर्घकालिक सफलता के लिए ईमानदारी, मेहनत और टीम भावना ही असली हथियार हैं।

माइनिंग टेनेमेंट सिस्टम

किरणबाला नायक
सहायक आहरण अधिकारी

भारतीय खान ब्यूरो (आईबीएम), खान मंत्रालय की "माइनिंग टेनमेंट सिस्टम" कोई-गवर्नेंस योजना 2024-2025 के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों की श्रेणी "डिजिटल परिवर्तन हेतु प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा सरकारी प्रक्रिया पुनर्रचना" के अंतर्गत स्वर्ण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है।

माइनिंग टेनेमेंट सिस्टम (एमटीएस) एक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म है जिसे खान मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय खान ब्यूरो (आईबीएम) द्वारा भारत में खनन संबंधी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित और डिजिटल बनाने के लिए विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य खनन क्षेत्र में पारदर्शिता बढ़ाना, दक्षता में सुधार करना और बेहतर डेटा प्रबंधन को सुगम बनाना है।

एमटीएस की मुख्य विशेषताएँ और उद्देश्य:

• डिजिटलीकरण और सुव्यवस्थितीकरण:

एमटीएस अनुमोदन, अनुपालन और डेटा प्रबंधन सहित विभिन्न खनन- संबंधी प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण करता है, जिससे वे अधिक कुशल और पारदर्शी बनते हैं।

• बढ़ी हुई पारदर्शिता:इस प्रणाली का उद्देश्य केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर खनिज रियायत व्यवस्था और खनन कार्यों

में पारदर्शिता बढ़ाना है।

• बेहतर डेटा प्रबंधन:

एमटीएस खनन क्षेत्रों से संबंधित डेटा के प्रबंधन और उस तक पहुँचने के लिए एक केंद्रीकृत मंच प्रदान करता है, जिससे बेहतर निर्णय लेने में सुविधा होती है।

• हितधारक सहयोग:

इस प्रणाली का उद्देश्य सरकारी एजेंसियों, खनन कंपनियों और अन्य संबंधित पक्षों सहित खनन क्षेत्र के विभिन्न हितधारकों के बीच सहयोग को बेहतर बनाना है।

• लचीलापन और अनुकूलनशीलता:

एमटीएस को भविष्य की तकनीकी प्रगति और खनन उद्योग की उभरती ज़रूरतों के अनुसार लचीला और अनुकूलनीय बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

• राज्यों को सहायता:

एमटीएस खनिज-समृद्ध राज्यों को उनके खनिज संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन में सहायता प्रदान करता है।

• व्यापार करने में आसानी:

प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित और पारदर्शिता बढ़ाकर, एमटीएस का उद्देश्य खनन क्षेत्र में व्यापार करने में आसानी को बेहतर बनाना है।

• उत्तरदायी खनन:

यह प्रणाली पर्यावरणीय नियमों और अन्य प्रासंगिक मानदंडों का अनुपालन सुनिश्चित कर के उत्तरदायी खनन प्रथाओं को बढ़ावा देती है।

कार्यान्वयन और प्रभाव:

• राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) द्वारा समर्थित आईबीएम, एमटीएस के कार्यान्वयन के लिए नोडल एजेंसी है।

• केंद्रीयस्तर (खान मंत्रालय और आईबीएम) और चार चयनित राज्यों (छत्तीसगढ़, गुजरात, कर्नाटक और राजस्थान) में संचालन के अध्ययन के आधार पर एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की गई थी।

• इस प्रणाली से खनिज संसाधन प्रबंधन की दक्षता में सुधार, पारदर्शिता बढ़ाने और उत्तरदायी खनन प्रथाओं को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

संक्षेप में, एमटीएस एक परिवर्तनकारी पहल है जिसका उद्देश्य डिजिटल प्रौद्योगिकी के माध्यम से भारत में खनन क्षेत्र का आधुनिकीकरण, पारदर्शिता को बढ़ावा देना और सतत विकास को बढ़ावा देना है।

पिछले एक दशक से भी ज़्यादा समय से भारतीय खान ब्यूरो के एक कर्मचारी के रूप में, मैंने तकनीक के आगमन के साथ कार्यालय की कार्यशैली में कई बदलाव देखे हैं। बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली से लेकर ई-ऑफिस, ऑनलाइन वार्षिक रिपोर्ट (APAR) तक।

तकनीकी अनुभाग में भारतीय खान ब्यूरो में पंजीकरण, ऑनलाइन खनन योजना अनुमोदन प्रणाली, ऑनलाइन मासिक और वार्षिक रिटर्न, ड्रोन और उपग्रह डेटा, डिजिटल हवाई चित्रों का ऑनलाइन प्रस्तुतीकरण आदि शामिल हैं।

सूची लंबी है और इसमें और भी वृद्धि हो रही है। भारतीय खान ब्यूरो नई तकनीकों को अपनाकर डिजिटल इंडिया क्रांति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

पिछले 77 वर्षों से भारतीय खान ब्यूरो अपनी बढ़ती उम्र के साथ अपने निरंतर प्रयास से नई ऊंचाइयों को छू रहा है।

परिवर्तन एक स्थायी स्थिरता है और भारतीय खान ब्यूरो नए कीर्तिमान स्थापित कर के इसे साबित कर रहा है।

गणतंत्र दिवस पर कार्यालय परिसर में ध्वजारोहण

तत्कालीन महानियंत्रक (प्रभारी) श्री पी. एन. शर्मा के कार्यालय में आगमन

स्वतंत्रता दिवस पर कार्यालय परिसर में ध्वजारोहण

मेजर ध्यानचंद के जन्म दिवस के अवसर में कार्यालय में मनाये गए खेल दिवस के कुछ झलकियाँ

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान लिया गया शपथ की झलकियाँ

कार्यालय के स्थापना दिवस की झलकियाँ

कार्यालय के स्थापना दिवस की झलकियाँ

स्वच्छता ही सेवा के दौरान किये गए वृक्षारोपण क्रार्यक्रम

महानियंत्रक (प्रभारी) श्री पी. एन. शर्मा का स्वागत

महानियंत्रक (प्रभारी) श्री पी. एन. शर्मा द्वारा MEMC सप्ताह का औपचारिक आरंभ

MEMC सप्ताह कार्यक्रम की झलकियाँ

MEMC सप्ताह कार्यक्रम की झलकियाँ

31 वें अखिल भारतीय खेल दिवस में कार्यालय के खिलाडियों द्वारा प्राप्त पुरस्कार की कुछ झलकियाँ

कार्यालय में योग दिवस के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

संसदीय राजभाषा आलेख्य और साक्ष्य उपसमिति

हिंदी पखवाड़ा

भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर
हिंदी पखवाड़ा